इस्लाम
आप का जन्माधिकार है

संकलन : माजिद अर्रस्सी
संशोधन : डा. बिलाल फिलिप्स

अनुवाद : महफूज़ुर्रहमान समीउल्लाह

प्रथम संस्करण

JAN. 2008

==================

الإسلام دين الفطرة

إعداد : ماجد بن سليمان الرسي
راجعه : د. أبو أمينة : بلال فيليبس
ترجمه : أبو عبد الله محفوظ الرحمن سميع الله

यह पुस्तक www.saaid.net/kutob पर उपलब्ध है

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين والصلاة والسلام على سيدنا ونبينا محمد

وعلى آله وصحبه أجمعين أما بعد !

इस में कोई संदेह नहीं कि यह जीवन एक परीक्षा है जिसे आप के संपूर्ण विश्वास की आवश्यक्ता है कि आप को अपनी अन्तिम यात्रा के लिये क्या सामग्री एकत्रित करनी है ।

केवल सत्य आस्था तथा सद्कार्य ही आप की समस्त समस्याओं के समाधान का एकमात्र साधन हैं ।

विषय सूची

इस्लाम प्राकृतिक धर्म ﴾अर्थात : आप का जन्म अधिकार﴿ है, नामी इस पुस्तिका में निम्नलिखित विषयों पर चर्चा की गई है :

فهرس المواضيع

١٠. ذكر طرف من محاسن الدين الإسلامي
١١. بيان عموم دين الإسلام لكافة البشر
١٢. مزايا تعاليم الدين الإسلامي
١٣. لماذا يجب على المكلف اعتناق دين الإسلام
١٤. خاتمة،
١٥. بيان كيفية الدخول في دين الإسلام،
١٦. ذكر مراجع علمية باللغة الإنجليزية لمن أراد مزيدا من الاطلاع على الدين الإسلامي ، مع ذكر بعض المواقع العلمية ودور النشر على شبكة الإنترنت.

وكتبه ماجد بن سليمان الرسي

इस्लाम
आप का जन्माधिकार है

प्रत्येक वह व्यक्ति जिस का जन्म किसी धार्मिक वातावरण में हुवा हो वह उस का व्यक्तिगत चुनाव नहीं होता, धर्ती पर मानवजाति के आवास से लेकर वर्तमान समय तक लोग या तो अपने घर का धर्म ग्रहण करते आये हैं या उन्हों ने स्वदेश के आदर्शों को धार्मिक रूप दिया है, व्यस्क होने के तत्पश्चात वह साधारणत्यः अपने पूर्वजों अथवा अपने समाज ही का धर्म ग्रहण करते हैं ।

फिर भी जो लोग शुद्धबुद्धि तथा परिपक्वता के स्वामी हैं एवं उन्हें अन्य आस्थाओं, आदर्शों तथा धर्मों के विषय में सत्य की खोज हैं, वह स्वयं ही अपनी आस्था की योग्यता पर प्रश्न चिन्ह लगाना आरंभ कर देते हैं । सत्य के खोजियों के लिये उन का यह अनुसंधान अधिकांश उस समय चिन्ताजनक तथा उलझन का कारण बन जाता है

जब प्रत्येक धर्म का अनुयाई, प्रत्येक धार्मिक दल, समस्त आदर्शों के मानने वाले सभी ही यह दावा करते हैं कि केवल उन्ही का धर्म सत्य, उन्ही के आदर्श सत्यता का पात्र हैं । उन्हें ज्ञान होना चाहिये कि तुलनात्मक शैली में तीन ही वस्तुयें संभव होती हैं या सभी सत्य हूँ, या सभी असत्य, अथवा एक सत्य तथा शेष असत्य । यहाँ यह बात विचार करने की है कि जब समस्त धर्म मूलिक नियमों तक में एक दूसरे से भिन्न हैं तो सभी सत्य नहीं हो सकते ।

तदातिरिक्त बहुसंख्यक यह दावा करते हैं कि केवल वही वास्तव में सत्य के पात्र हैं तथा शेष असत्य । दूसरी ओर यदि हम यह दावा करते हैं कि समस्त धर्म असत्य हैं तो फिर मानो हम मानवजाति के लिये अल्लाह की उतारी हुई इच्छा ही का इंकार कर बैठेंगे । उन लोगों के लिये यह धारणा बड़ी घटिया और अति आश्चर्यजनक है जो एक सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञाता पर विश्वास रखते हैं ।

अतः परस्तुत पुस्तक का संकलन इसी उद्देश्य से किया गया है कि सत्य के खोजियों को ज्ञान होसके कि कौन सा धर्म सत्य है तथा वह उस सत्य तक किस प्रकार पहुंच सकते हैं ।

जिसे सत्य धर्म की खोज है उसे आरंभ ही में चार बातों को ध्यान में रखना चाहिये : **प्रथम** : अल्लाह ने हमें यह क्षमता, योग्यता तथा बुद्धि प्रदान की है कि हम इस बात का सटीक निर्णय ले सकें कि सत्य धर्म कौन है । **द्वितीय** : अल्लाह जो अति दयावान, महाकृपालु है उस ने बिना किसी मार्गदर्शन के हमें यूँ ही पथभ्रष्ट होने के लिये नहीं छोड़ दिया है, अपितु उस ने हमारे पास अपने दूत भेजे, धार्मिक ग्रन्थ उतारे ताकि वह हमें सत्य मार्ग दिखा सकें । **त्रतीय** : सत्य धर्म की खोज किसी भी मनुष्य के जीवन का सर्वमहान उद्देश्य होना चाहिये इस लिये कि अन्तिम दिवस की सफलता इसी पर निर्भर है [1]।

---

[1]) बाईबिल अपने वर्तमान रूप में इस बात को स्पष्ट कर चुका है कि

चौथा : यदि कोई भावुक्ता तथा पक्षपात को जो अधिकांश मनुष्य को अंधा कर देती हैं एक ओर रख दे तो संभवतः वह सत्य मार्ग से परिचित हो सकता है सुदृढ़ तथा सटीक निर्णय ले सकता है।

सत्य की खोज ही प्रत्येक समस्या की समाधान का मूल साधन है। जान 8 : 32 : में कहती है : ﴾तुम्हें सत्य का ज्ञान होना चाहिये और जानना चाहिये कि सत्य का ज्ञान ही तुम्हें वास्तविक स्वतंत्रा प्रदान कर सकता है﴿ मुसलमान इस बात में विश्वास रखते हैं कि वर्तमान इंजील में अब भी सत्य प्रकाश पाया जाता है यद्यपि उसे बड़ी ढिठाई के साथ परिवर्तित कर दिया गया है।

1- जन्म उद्देश्य

क्या अभी तक आप को हमारे जन्म उेद्दश्य पर आश्चर्य है ? अभी तक आप को हमारे जीवन के कारण पर आश्चर्य है ? क्या आप को अभी तक आश्चर्य है कि हमारी मृत्यु क्यों होती है ? तथा मृत्योपरान्त हम कहाँ जायेंगे ? अन्त में हमारे साथ क्या होगा ? क्या कभी आप ने स्वयं से प्रश्न किया कि अल्लाह ने धर्ती आकाश और उन के मध्य पाई जाने वाली वस्तुओं को किस उद्देश्य से जन्म दिया तथा उन्हें मनुष्य के अधिकार में क्यों दिया है। दिन रात, सूर्य चन्द्रमा की रचना क्यों हुई ? हमें अपने जीवन में क्या करना चाहिये, जीवन के संदर्भ में हमारा क्या कर्तव्य बनता है ? क्या हमें मृत्यु से पूर्व केवल खाने पीने और आनन्द लेने के लिये जन्म दिया गया है। जैसा कि किसी कवि ने कहा है :

《मुझे ज्ञान नहीं कि मैं कब आया हूँ, बस मैं ने देखा कि सड़क पर मेरे पैर पड़ रहे हैं और

मैं चलता जा रहा हूँ, जहाँ लोग आनन्द ले रहे होते हैं मैं वहाँ पहुंचता हूँ और रुक जाता हूँ सहसा ही मेरे होंटों पे यह प्रश्न आता है कि मैं यहाँ क्या कर रहा हूँ।

अल्लाह ने दिव्य कुर्आन[1]की बहुत सी आयतों में स्पष्ट किया है कि उस ने मानवजति को बिना उद्देश्य जन्म नहीं दिया है, अल्लाह का फ़र्मान है : ﴾क्या तुम इस भ्रम में हो कि हम ने तुम्हें यूँ ही व्यर्थ जन्म दिया है और यह कि तुम हमारी ओर नही लौटाये जाओगे﴿ (सूरये मोमिनून:115) [2]
अल्लाह का यह भी फ़र्मान है : ﴾क्या मनुष्य इस भ्रम में है कि उसे व्यर्थ ही छोड़ दिया जायेगा﴿ (सूरये दहर (75) : 36) इस विषय को अधिक स्पष्ट करते हुये अल्लाह फ़र्माता है : ﴾क्या लोग

---

[1]) कुर्आन वह पवित्र ग्रन्थ है जो अन्तिम दूत मुहम्मद ﷺ पर उतारा गया, कुर्आन के विषय में विस्तारपूर्ण ज्ञान के लिये पृष्ट 22 देखिये।
[2]) ध्यान रहे कि इस पुस्तक में पवित्र क़ुर्आन का जो भी उद्धरण दिया गया है वह वास्तव में अरबी भाषा से हिन्दी में किया गया अनुवाद है, स्वयं कुर्आन की आयत नहीं।

इस भ्रम में हैं कि केवल उन के इस दावे पर कि हम ईमान लाये हैं, हम उन की परीक्षा लिये बिना ही छोड़ देगें﴾ (सूरये अंकबूत (29) : 2)
अपितु अल्लाह ने मानवजाति को महान उद्देश्य के लिये तथा महान उद्देश्य के साथ जन्म दिया है, वह यह कि : मात्र उसी की उपासना अराधना करना। एकेश्वरवाद की आस्था ही मनुष्य के जीवन का मूल उद्देश्य है। अल्लाह फ़र्माता है :
﴿मैं ने मानव तथा दानव को केवल अपनी उपासना के लिये जन्म दिया है, मैं उन से न तो जीविका चाहता हूँ और न यही कि वह मुझे खिलायें। निःसंदेह अल्लाह [1] तो स्वयं ही सब को जीविका प्रदान करने वाला, सर्वशक्तिमान महा बलवान है। ﴿51 : 56-58﴾
इस में संदेह नहीं कि समस्त संदेष्टाओं तथा ईश्दूतों ने अपनी समुदाय के लोगों को मात्र एक अल्लाह ही की उपासना करने का आदेश दिया, सब के धर्म निमंत्रण का मूल आधार एकेश्वरवाद

[1]) कुर्आन के अनुसार ﴾अल्लाह﴿ ईश्वर का वास्तविक नाम है।

ही था। सभी ने स्रष्टा की उपासना को त्याग कर सृष्टि की उपासना करने को घोर पाप तथा महान अपराध बताया और मूर्ति पूजा से दूर रहने की कड़ी चेतावनी दी। अल्लाह फ़र्माता है : ﴾हम ने प्रत्येक समुदाय में एक दूत भेजा कि : (लोगो !) मात्र अल्लाह की उपासना करो तथा उस के अतिरिक्त समस्त मिथ्या उपास्यों (देवी देवताओं) से बचो﴿। ﴾16:36﴿

ऊदाहरण स्वरूप ईश्दूत हज़रत इब्राहीम ﷵ एक अल्लाह पर ईमान लाये जिस का कोई साझी नहीं अतः अब जो भी ईश्वर (सर्वमहान अल्लाह) के विषय में विभिन्न विचार रखता है तो वह वास्तव में हज़रत इब्राहीम ﷵ के धर्म का विरोधी तथा उसे झुटलाने वाला है एवं वह मिथ्या तथा झूटे धर्म का अनुयाई है। अल्लाह दिव्य कुर्आन में फ़र्माता है : ﴾इब्राहीम के धर्म से वही मुंह फेरे गा तथा निस्पृहता का प्रदर्शन करेगा जो स्वयं निरा मूर्ख हो ﴿ ﴾2 : 130﴿

गास्पेल में हज़रत ईसा ﷺ से रिवायत है, आप ने फ़र्माया यह बात लिखी हुई है कि : मात्र अपने रब, अपने दाता की उपासना करो तथा केवल उसी की सेवा करो। ﴾लूक़ा : 4 : 8﴿

हज़रत याकूब ﷺ ने कुर्आन की भाषा में अपनी समुदाय के लोगों से कुछ यूँ कहा : ﴾अल्लाह के अतिरिक्त जिन की तुम उपासना करते हो वह तो मात्र नाम हैं जिन्हें तुम ने तथा तुम्हारे पूर्वजों ने स्वयं ही गढ़ लिये हैं, अल्लाह ने उन का कोई प्रमाण नहीं उतारा। राज्य तथा शासन केवल अल्लाह ही के लिये है। उस का कड़ा आदेश है कि तुम मात्र उसी की उपासना करो। यही सत्य धर्म है किन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते। ﴾12 : 40﴿

2- इस्लाम का मूल संदेश

इस्लाम का मूल संदेश वही है जो समस्त भूतपूर्व ईश्दूतों ने अपनी समुदाय के सम्मुख परस्तुत किया कि : ﴿मात्र एक अल्लाह की उपासना करो तथा उस के साथ किसी अन्य को साझी न बनाओ। चाहे वह कोई मनुष्य हो, थान अथवा कोई वस्तु, प्रत्यक्ष में हो अथवा अप्रत्यक्ष में। एकेश्वरवाद का यह मूल आधार क़ुर्आन करीम की फातिहा नामित आरंभिक सूरत में बड़े विस्तार के साथ परस्तुत कर दिया गया है। अल्लाह इस सूरत के मंत्र : 4 में फ़र्माता है : केवल हम तेरी ही उपासना करते है तथा मात्र तुझी से सहायता चाहते हैं। क़ुर्आन में एक अन्य स्थान पर अल्लाह फ़र्माता है : ﴿मात्र अल्लाह की उपासना करो, उस के संग किसी को साझी न बनाओ ﴾। ﴿4:36﴾

अल्लाह के अन्तिम दूत मुहम्मद ﷺ से रिवायत है, आप ने फ़र्माया : कोई भी व्यक्ति जिस ने कहा : अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं तथा

इसी आस्था पर उस की मृत्यु हुई उसे स्वर्ग से सम्मानित किया जायेगा [1] ।

3- ﴾उपासना केवल अल्लाह का अधिकार है﴿ इस के प्रमाण ।

मात्र अल्लाह ही की उपासना होनी चाहिये, इस लिये कि वही जन्मदाता तथा स्रष्टा है, वही संपूर्ण सृष्टि को जीविका प्रदान करने वाला है । यह विशाल ब्रम्हाण्ड तथा उस में पाई जाने वाली समस्त वस्तुयें अकस्मात जन्म नहीं पागई हैं, न ही सृष्टि की रचना कोई आकस्मिक घटना है । चिन्ह बताते हैं कि मात्र अल्लाह ही वह सर्वमहान शक्ति है जिस के चमतकार धर्ती आकाश तथा संसार में पाई जाने वाली प्रत्येक वस्तु तथा प्राण में देखे जासकते हैं । सर्वलोक का स्वामी अल्लाह फ़र्माता है : ﴾अल्लाह ही है जिस ने धर्ती आकाश की रचना की है, वही आकाश से वर्षा को उतार कर उस के माध्यम से तुम्हारे लिये फलों की आहार

[1]) सहीह बुख़ारी (5827) सहीह मुस्लिम (94).

देता है। उस ने कश्तियों को तुम्हारे अधीन कर दिया है ताकि उस के आदेशानुसार समुद्र में वह चलें फिरें। उस ने नदियाँ और नहरें भी तुम्हारे अधीन कर दी हैं। उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को इस प्रकार तुम्हारे सेवाधीन कर दिया है कि निरंतर चल रहे हैं। उस ने रात और दिन को भी तुम्हारे सेवा में लगा रख्खा है। उसी ने तुम्हें प्रत्येक वस्तु से मुंह माँगा दिया है। **(14:32-34)**

दिव्य क़ुर्आन में अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम ﵇ के सत्य की खोज अभ्यान को एक उदाहरण के रूप में परस्तुत किया है कि किस प्रकार अल्लाह के चिन्हों पर विश्वास करने वालों को शीघ्र ही मात्र एक अल्लाह की उपासना का सत्य मार्ग मिल जाता है। अल्लाह फ़र्माता है : ﴿और इसी प्रकार हम ने इब्राहीम ﵇ को धर्ती आकाश के साम्राज्य के दर्शन करवाये और ताकि वह पूर्ण विश्वास धारियों में से हो जाये। फिर जब रात्रि की कालिमा उन पर छा गई उन्हों ने एक नक्षत्र देखा और कहा : यह मेरा प्रतिपालक है फिर जब वह

छुप गया तो आप ने फ़र्माया : मै अस्त पात्रों से प्रेम नहीं करता । फिर जब आप ने चमक्ते चन्द्रमा को उदय होते देखा तो आप ने कहा : यह मेरा प्रतिपालक है किन्तु जब उस का भी अस्त हो गया तो आप कहने लगे : यदि मुझे मेरे विधाता तथा प्रतिपालक का मार्गदर्शन न मिला तो मैं निःसंदेह पथभ्रष्ट लोगों में से हो जाऊँगा । फिर जब सूर्य को चमकते हुये देखा तो कहा यही मेरा प्रतिपालक है यह तो सर्वमहान है फिर जब वह भी डूब गया तो आप ने फ़र्माया : हे मेरी समुदाय वालो ! मैं अल्लाह के साथ तुम्हारे साझीदार बनाने से अप्रसन्न हूँ मैं तो चित्तएकाग्र हो कर अपनी दिशा उस की ओर करता हूँ जिस ने धर्ती आकाश की रचना की है एवं मैं अनेकेश्वर वादियों में से नहीं हूँ ﴾ । **(6:75-79)**

वास्तविक्ता यह है कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह लोगों को निरंतर ब्रम्हाण्ड को देखने का निमंत्रण देता है । इस लिये कि यही उस के अस्तित्व के आकाशीय सत्य, उस की सर्वमहानता को

प्रमाणित करेंगी तथा इसी से यह बात भी स्पष्ट होगी कि मात्र अल्लाह ही की उपासना होनी चाहिये, केवल अल्लाह ही हमारी उपासना के योग्य है क्यों कि केवल वही हमारी प्रार्थनाओं को सुनता और स्वीकार करता है, अल्लाह पवित्र क़ुर्आन में कहता है : ﴿तथा तुम्हारे प्रतिपालक का आदेश है : केवल मझे पुकारो, मैं तुम्हारी पुकार अवश्य सुनुंगा﴾ । **(40:60)** अतः यदि कोई किसी मूर्ति को पुकारता है और उस की पुकार का परिणाम भी सामने आता है, तो वास्तव में वह मूर्तियाँ नहीं हैं जो पुकारने वाले की पुकार को सुनती हैं अपितु वह अल्लाह ही है जो सब की सुनता और सब को प्रदान करता है। साधारणत्यः ईसा ﷵ को पुकारने वाले, गौतम बुद्ध को पुकारने वाले, राम तथा कृश्न को पुकारने वाले, महावीर जैन, विश्नु, शिवशंकर, साधू करिस्टोफर, साधू जूद अथवा नबी करीम ﷺ को पुकारने वाले अपने महारिशियों से अपनी प्रार्थना का उत्तर नहीं पाते अपितु अल्लाह ही उन की

सुनता और प्रार्थनाओं को स्वीकार करता है। पता यह चला कि प्रार्थना स्वयं एक उपासना है जिस के योग्य केवल सर्वमहान अल्लाह ही है। अतः लोगों को प्रत्यक्ष में केवल अल्लाह ही से प्रार्थना करनी चाहिये।

वास्तविक्ता यह है कि अल्लाह के साथ जिन रिशियों मुनियों तथा ईश्दूतों की उपासना होती है उन्हों ने कदापि किसी को अपनी उपासना का आदेश नहीं दिया। अपितु उन्हों ने अपनी समुदाय को अल्लाह के साथ किसी को साझी न बनाने की कड़ी चेतावनी दी है। उदाहरण स्वरूप इस्लाम की यह शिक्षा है कि हज़रत ईसा عليه السلام एक मनुष्य मात्र थे जिन्हें बड़े ही अनोखे ढंग से अल्लाह ने बिना पिता के जन्म दिया। आप का जन्म बिना किसी पुरूष केवल माँ हज़रत मर्यम के माध्यम से हुआ तथा आप ने भी अल्लाह ही की उपासना की। आप स्वयं न तो ईश्वर थे, न ही ईश्वर के पुत्र और न ही आप ने कदापि ईश्वर होने का दावा किया।

आप त्रीश्वरवाद का भाग भी नहीं हैं जैसा कि ईसाई कहते और विश्वास रखते हैं, तथा न ही आप वर्णसंकर एवं अवैध संतान हैं जैसा कि यहूदी आस्था रखते हैं। (अल्लाह की पनाह)। उन्हों ने अपनी समुदाय के लोगों (इस्राईल के कुटुंबों) को मात्र एक अल्लाह की पूजा की शिक्षा दी। उन्हों ने लोगों को स्वयं न तो अपनी पूजा का आदेश दिया तथा न ही अपनी माता की उपासना की बात की। इस से भी बढ़कर जब लोगों ने आप को पूजना आरंभ किया तो आप ने अपनी उपासना नहीं की अपितु उस समय भी आप ने केवल अकेले अल्लाह ही की उपासना की यथा जो लोग अपने आप को ईसा ﷺ का अनुयाई होने का दावा करते हैं, वही आज स्वयं ईसा ﷺ ही की पूजा में लीन हैं, उन का यह दावा है कि ईसा ﷺ ही वास्तविक ईश्वर हैं। कुछ अन्य आप की माता की भी पूजा करते हैं, उन की आस्था है कि वह ﴾ईश्वर की माता हैं﴿ (अल्लाह की पनाह)। अल्लाह पवित्र क़ुर्आन में

उन की इस आस्था का खण्डन करते हुये कहता है कि वह प्रलय के दिन हज़रत ईसा ﷺ से प्रश्न करेगा : ﴿हे ईसा, मर्यम के पुत्र ! क्या तुम ने लोगों से यह कहा था कि : मुझे और मेरी माता को अल्लाह के साथ अपना उपास्य बना लो ? उस समय हज़रत ईसा ﷺ उत्तर देंगे : तेरी क्षमा याचना, मैं ने वह बात उन से कदापि नहीं कही जिसे कहने का मुझे अधिकार नहीं । यदि मैं ने ऐसा कहा है तो तुझे इस का ज्ञान है, तुझे तो मेरी अन्तरात्मा का भी ज्ञान है जबकि मैं नहीं जानता कि तेरी अन्तरात्मा में क्या है । वास्तव में मात्र तू ही अन देखी, आँखों से लिप्त वस्तुओं का ज्ञान रखने वाला है । मैं ने केवल उन से वही कहा है जिस का तू ने मुझे आदेश दिया कि मात्र अल्लाह की पूजा करो जो मेरा तथा तुम्हारा प्रतिपालक है । तथा मैं जब तक उन में था तब तक के लिये मैं उन पर साक्षी हूँ । किन्तु जब तू ने मुझे उठा लिया तब से तू ही उन का वास्तविक निरीक्षक था तथा तू हर वस्तु पर साक्षी है । **(5:116 - 117)**

अल्लाह ने पवित्र क़ुर्आन में दृढ़तापूर्वक बताया है कि ईसा ﷺ की न तो हत्या हुई है न ही आप को सूली पर लटकाया गया, अपितु अल्लाह ने उन्हें शरीर तथा आत्मा सहित अपनी विशेष कृपा से आकाश में उठा लिया एवं संसार के अन्त से पूर्व आप धर्ती पर वापस आयेंगे। ईश्दूत मुहम्मद ﷺ ने फ़र्माया : संसार के अन्त से पूर्व ईसा ﷺ पुनः धर्ती पर वापस आयेंगे तथा इस्लामी संविधान के अनुसार धर्ती पर शासन करेंगे, फिर अन्य लोगों के समान धर्ती पर आप की भी मृत्यु होगी एवं आप को दफन किया जायेगा तथा न्याय के दिन अन्य लोगों के साथ पुनः आप को भी जीवित किया जायेगा।

इसी कारण ईसा ﷺ जिन्हें जीवन प्रदान किया गया, वह भी एक स्त्री की कोख से उत्पन्न हुये थे और आप का खतना किया गया था, आप खाते पीते, सोते भी थे और आप को शौच जाने की आवश्यक्ता भी पड़ती थी, आप बड़े हुये, अल्लाह की उपासना की और आप की मृत्यु भी

अवश्य होगी । अतः आप को कदापि ईश्वर का स्थान नहीं देना चाहिये और न ही आप को ईश्वर बनाने का घोर पाप करना चाहिये, क्योंकि उपरोक्त वर्णित सारी विशेष्तायें किसी ईश्वर की नहीं अपितु उस की सृष्टि में पाई जाती हैं ।

बाइबिल कहती है कि ईसा ﷺ ने अपने अनुयाइयों को यह कहते हुये अल्लाह की उपासना की शिक्षा दी : हमारा बाप [1] जिस ने स्वर्ग में नाना प्रकार की सुखसामग्रियाँ पैदा कीं, जो अति पवित्र है वह तुम्हारा नाम होगा, तुम्हारा राज्य होगा, धर्ती पर तुम्हारी समस्त कामनाओं की पूर्ति होगी जिस प्रकार वह स्वर्ग में साकार होने वाली हैं । **(लूक़ा 11:2 / मैथिव 6:9-10)**

ईसा ﷺ ने यह शिक्षा भी दी कि मात्र वही लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे जो अल्लाह के समक्ष स्वयं समर्पण करते हैं । ईसा ﷺ कहते हैं : जो मुझे ईश्वर कहकर पुकारते हैं उन में कोई भी

---

[1]) यह व्यक्तिवाचक का एक उदाहरण है कि गोस्पेल में पाया जाना वाला शब्द ﴾फादर (बाप)﴿ ही वास्तव में गाड ﴾ईश्वर﴿ होगा ।

कदापि अल्लाह के राज्य (स्वर्ग) में प्रवेश नहीं करेगा अतिरिक्त उस के जो मेरे बाप के आदेशों का पालन करेगा तथा उस की चाहत की पूर्ति में कोई कसर नहीं उठा रखे गा। **(मैथिव 7:21)**
ईश्दूत ईसा عليه السلام ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि उन्हों ने स्वंय अपने आप को भी अल्लाह की चाहतों के अधीन कर लिया, आप स्वयं अल्लाह की चाहतों के समक्ष आत्मसमर्पण कर चुके हैं :
मैं स्वयं कोई कार्य नहीं करता, मुझे जो आदेश मिलते हैं उन्हीं के अनुसार फैसले करता हूँ, मेरे सारे फैसले ईमानदारी पर आधारित हैं, क्यों कि मैं स्वयं अपनी इच्छाओं के पीछे नहीं पड़ता और न ही उन की खोज में रहता हूँ अपितु मैं तो उस की चाहतों तथा आदेशों का पाबन्द हूँ जिस ने मुझे भेजा है। (यूहना 5:23)
वास्तविक्ता यह है कि गोसपेल में ऐसे बहुत से प्रमाण हैं जो यह दर्शाते हैं कि हज़रत ईसा عليه السلام ने अपने अनुयाइयों के समक्ष इस बात को बड़ा स्पष्ट कर दिया था कि वह स्वयं ईश्वर नहीं

अपुपि ईश्वर के भेजे हुये अवतार हैं । उदाहरण स्वरूप आप ने निर्णायक दिवस के विषय में बात करते हुये फ़र्माया : किसी को भी उस दिन के विषय में कोई ज्ञान नहीं न ही उस घड़ी का पता है, यथा स्वर्ग में रहने वाले पार्षदों को भी इस का ज्ञान नहीं न ही बेटे [1] को, उस का ज्ञान केवल ईश्वर ही को है । **(मरकुस 13:32)**

गौतम बुद्ध एक महान समाज सुधारक थे जिन्हों ने भारत में हिन्दू धर्म के अनुयायियो के समक्ष असंख्य मानवीय आधारों को परिचित कराया, उन्हों ने स्वयं ईश्वर होने का दावा कदापि नहीं किया न ही उन्हों ने अपने मानने वालों को यह परामर्श दिया कि उन की उपासना की जाये । इस के बावजूद आज बहुत सारे बुद्धिस्टों ने गौतम बुद्ध को अपना भगवान बना लिया और वह स्वयं उन मूर्तियों के समक्ष प्रियात्मक रूप से अपना शीष नवाते और उन के

[1]) यह गास्पेल म परिवर्तन का एक अन्य उहदाहरण है ।वास्तव में (son) के स्थान पर (the slave) होना चाहिये जिस का अर्थ दास के हैं।

सिजदे करते हैं । परिणाम स्वरूप इस्लाम के अतिरिक्त आज संसार के सारे धर्म लोगों को सृष्टि की पूजा की शिक्षा देते हैं । हिन्दू धर्म की दशा तो और भी बुरी है । हिन्दू हर उस वस्तु को अपना भगवान बना बैठते हैं जिस में उन्हें किसी प्रकार की कोई प्रत्यक्ष शक्ति दिखाई देती है । सूर्य धर्ती आकाश, चन्द्रमा, समुद्र, वृक्ष, पत्थर पहाड़ स्थान पशुओं तक की पूजा हिन्दू धर्म में की जाती है ।

ईश्वर की पर्याप्त विशेष्तायें इस वास्तविक्ता की ओर संकेत करती हैं कि उपासना के योग्य केवल वही है । वह एकमात्र है, उस का कोई संबन्धी नहीं, न उस का कोई पिता है,न ही माता पत्नी और संतान, वह अनन्त, सर्वकालिक, सर्वशक्तिमान है । न तो उस ने अपनी कोख से किसी को जन्म दिया और न ही किसी की कोख से वह स्वयं पैदा हुआ, उस जैसा कोई नहीं । वह अपने ज्ञान, अपी शक्ति, अपनी इच्छा, अपनी कृपा तथा अपने अन्य समस्त विशेष्ताओं और

कार्यों में पूर्ण सक्षम है । ईश्वर सर्वशक्तिमान तथा क्षमतापूर्ण होता है जबकि मनुष्य दुर्बल असहाय तथा क्षमताहीन होता है । उस ने इसी प्रकार अपने आप को परिचित कराया है तथा इसी प्रकार उस के दूतों ने उस का परिचय परस्तुत किया है ।

एक अन्य प्रमाण हमें स्वयं मनुष्य की अंतरात्मा से मिल सकता है कि मात्र अल्लाह ही उपासना के योग्य है । इस्लाम हमें इस बात की शिक्षा देता है कि मानवजाति की आत्मा में ईश्वर की अनुभूति की छाप और उस की दिशा एक प्राकृतिक झुकाव मौजूद होता है कि मात्र उसी की पूजा की जाये ।

क़ुर्आन करीम में अल्लाह ने स्पष्ट कर दिया है कि जब उस ने मानव जाति की आधारशिला हज़रत आदम عليه السلام को जन्म दिया तो आदम عليه السلام की साख से जन्म पाने वाली समस्त संतान को उपस्थित होने का आदेश दिया फिर उन सब से यह कहते हुये एक वचन लिया : क्या मैं तुम्हारा

पालनहार नहीं हूँ, उत्तर में सब ने यही कहा : हाँ हम इसे स्वीकार करते हैं। फिर ईश्वर ने कारण बताते हुये कहा कि उस ने संपूर्ण मानव जाति से यह गवाही और ऐसा वचन क्यों लिया कि वही उन का वास्तविक स्वामी है तथा वही उपासना के योग्य है : ताकि प्रलय के दिन तुम में से कोई यह न कह सके कि हमें तो इस का ज्ञान ही नही था।

ईश्वर ने इस विषय पर अधिक चर्चा करते हुये कहा (ऐसा इस कारण भी है कि यदि तुम कहने लगो : अल्लाह के साथ शिर्क तो हम से पूर्व हमारे पूर्वजों ने किया था। हम तो उन के बाद उन की आने वाली संतान हैं। क्या तू झुटलाने वालों के करतूत के बदले हमारा सर्वनाश कर देगा)। **(7:173)**

ईश्दूत मुहम्मद ﷺ ने फ़र्माया कि ईश्वर कहता है : मैं ने अपने बन्दों को सत्य धर्म पर जन्म दिया था, किन्तु शैतान ने उन्हें पथभ्रष्टता के मार्ग पर डाल दिया। [1] आप ने यह भी

[1]) सहीह मुस्लिम **(2865)**

फ़र्माया : प्रत्येक नवजात शिशु इस्लाम धर्म पर जन्म लेता है फिर उस के माता पिता उसे यहूदी, नसरानी या मजूसी बना देते हैं । [1] इस प्रकार यदि विचार किया जाये तो इस्लाम प्रत्येक व्यक्ति का जन्माधिकार है । जब प्रत्येक जन्मजात शिशु इस बात की प्राकृतिक आस्था लेकर जन्म लेता है कि ईश्वर मौजूद है एवं मात्र उसी की उपासना की ओर वह प्राकृतिक झुकाव भी रखता है । अब जिस प्रकार बच्चा शारीरिक उन्नति के क़ानून का पाबन्द होता है जिसे ईश्वर ने शारीरिक संसार में लागू किया है, इसी प्रकार उस की आत्मा भी प्राकृतिक रूप से इस वास्तविक्ता को स्वीकार कर लेती है कि मात्र ईश्वर ही स्रष्टा तथा प्रतिपालक है एवं मात्र वही उपासना के योग्य भी है ।

किन्तु यदि उन के माता पिता किसी विभिन्न मार्ग के मानने वाले हैं तो किसी बच्चे में साधारणत्यः इतनी शक्ति, इतना अभिमान नहीं

---

[1]) सहीह बुख़ारी (1385) सही मुस्लिम (2658)

होता अथवा न ही उसे पर्याप्त ज्ञान होता है कि वह सत्य का पता लगा सके या माता पिता की इच्छाओं का मुक़ाबला कर सके । इस स्थिति में बच्चा जिस धर्म को स्वीकार करता है वह समुदाय की रीति रिवाज होती है या जिस पर उस का प्रशिक्षण होता है वह उसी धर्म को स्वीकार करता है । किन्तु महा कृपालु ईश्वर की यह महिमा है कि वह इस प्रकार के मिथ्या धर्मों का अनुसरण करने के कारण बच्चे को यात्ना तथा दण्ड के लिये उस समय तक नहीं पकड़े गा जब तक कि वह व्यस्क न हो जाये तथा उस के सामने इस्लाम का शुद्ध संदेश खोल कर न परस्तुत कर दिया जाये

4 : झूटे धर्मों का संदेश

दूसरी तरफ समस्त झूटे धर्म किसी न किसी रूप में मूर्ति पूजा की शिक्षा देते हैं। कुछ धर्म अप्रत्यक्ष में मूर्ति पूजा की ओर बुलाते हैं जब कि वह ईश्वर की एकता की बात करते हैं। जब कि कुछ धर्म मात्र ईश्वर की उपासना छोड़ खुल्लम खुल्ला ईश्वर के साथ अन्य देवी देवताओं की पूजा की शिक्षा देते हैं। संसार में मूर्ति पूजा वह महा पाप है जिसे धर्ती पर एक मनुष्य करता है, क्यों कि इस प्रकार स्रष्टा और सृष्टि में समानता का व्यर्थ प्रयास किया जाता है और उपासन को उस के मूल स्थान (स्रष्टा) से फेर कर सृष्टि की ओर कर दिया जाता है। यह मनुष्य के जन्म के उस महान उद्देश्य के विरुद्ध है जिस में केवल एक ईश्वर की पूजा की बात कही गई है।

जो व्यक्ति मूर्ति पूजा की आस्था रख उस के अनुसार मूर्ति पूजा करते हुये मरता है वास्तव में दूसरे जन्म में वह अपनी आंतरिक सफलता के सारे मार्ग बन्द कर देता है। यह मात्र विचार नहीं

अपितु आकाश से उतरा हुआ वह सत्य है जिसे ईश्वर ने क़ुर्आन में बड़े विस्तार के साथ ब्यान किया है। ﴿निःसंदेह अल्लाह अपने साथ साझीदार बनाये जाने को कदापि क्षमा नहीं करेगा, इस के अतिरिक्त जिस के जो पाप चाहे क्षमा कर देगा। **(4:48 & 116)**

मनुष्य को ईश्वर को छोड़ कर किसी अन्य की उपासना नहीं करनी चाहिये क्यों कि इसे बुद्धि की बात नही कहा जासकता कि ऐसी सृष्टि की उपासना की जाये जो स्वयं असहाय तथा दुर्बल है और वास्तविक रचयिता को त्याग दिया जाये जो सर्वलोक का प्रबन्ध चलाता है। अल्लाह दिव्य क़ुर्आन में फ़र्माता है : क्या वह उन्हें (ईश्वर का) साझीदार बनाते हैं जो किसी वस्तु को जन्म न दे सकें अपितु वह स्वयं ही जन्म दिये गये हैं। एवं वह उन की किसी प्रकार की सहायता नहीं कर सकते न ही स्वयं वह अपने आप को कोई सहायता पहुंचा सकते हैं। एवं यदि तुम उन्हें कोई बात बताने के लिये पुकारो तो वह तुम्हारे कहने

पर न चलें। तुम्हारे लिये दोनों बातें समान हैं चाहे तुम उन्हें पुकारो अथवा मौन रहो। वास्तव में ईश्वर के अतिरिक्त तुम जिन की उपासना करते हो वह भी तुम्हारे समान ईश्वर के दास हैं, अतः तुम उन्हें पुकारो तथा उन्हें चाहिये कि वह तुम्हारी पुकार का उत्तर दें यदि तुम सत्यावान हो क्या उन के पावं हैं जिन से वह चलते हूँ अथवा क्या उन के हाथ हैं जिन से वह किसी वस्तु को थाम सकें, या उन की आँखें हैं जिन से वह देखते हूँ, या उन के कान हैं जिन से वह सुनते हैं। आप कह दीजिये ! तुम अपने सब साझीदारों को बुला लो फिर मुझे हानि पहुंचाने की चेष्टा करो फिर मुझे तनिक भी अवसर न दो **(7:191-195)**

उपरोक्त बातें ईश्वर की ओर से मनुष्य के पास उतरे हुये संदेश चिन्ह का मात्र उदाहरण हैं जिस में उसे मूर्ति पूजा की गलतियाँ दिखाई गई हैं

दक्षिणी अमरीका, ब्राज़ील के इमैज़न जंगल के दक्षिण पूर्वी क्षेत्र में एक प्राचीन आदि वासी कटुंब ने अपने मूल मूर्ति को रखने के लिये एक

नई झोपड़ी बनाई और संसार के समक्ष यह दर्शाया कि वह संपूर्ण सृष्टि का सर्वमहान ईश्वर है। उसी दिन एक युवक अपने देवता को डांडवत करने के लिये झोपड़ी में घुसा, (देवता ही उस का जन्मदाता तथा रचयिता है) दी गई इस शिक्षानुसार जिस समय वह अपने देवता के समक्ष सजदा कर रहा था, एक मरियल, ख़ारिश ज़दह खटमलों से लदे बुड्ढे कुत्ते ने झोंपड़ी में गंदगी कर दी, युवक अभी कुत्ते को देख ही रहा था कि उस ने अपना पिछला पैर उठाया और मूर्ति पर पेशाब कर दिया, अपमान की यह सीमा ! युवक बड़ा क्रोधित हुआ, उस ने कुत्ते को मंदिर से बाहर भगाया, किन्तु जब उस का तीव्र क्रोध ठंडा हुआ, तो उसे विश्वास होगया कि मूर्तियाँ संसार का स्वामी नहीं बन सकतीं। इस से वह इस परिणाम पर पहुंचा कि ईश्वर को कहीं और होना चाहिये। दिखने से भी आश्चर्य की बात तो यह है कि मूर्ति पर कुत्ते का पेशाब करना उस युवक के लिये ईश्वर की ओर से एक संकेत था कि उस की

मूर्ति पूजा उपासना के योग्य ही नहीं। और उस अनपढ़, गंवार और सभ्यता से दूर व्यक्ति की समझ में यह बात आ भी गई।

यह चिन्ह एक ऐसे ईश्वरीय संदेश को सम्मिलित था कि जिस की वह पूजा कर रहा था वह सब झूठ था। इस विचार ने उसे पूर्वजों से सीखे सिखाये देवी देवता तथा मूर्ति पूजा की दासता से स्वतंत्र कर दिया। परिणाम स्वरूप उस व्यक्त को एक अवसर दिया गया, या तो सत्य ईश्वर का चुनाव कर ले अथवा फिर उसी अंधकार में गिर जाये तथा उसी गलत मार्ग को अपना ले जिस पर वह अभी तक चलता आया है।

5 : ईश्वर एवं उस की सृष्टि

इस्लाम दृढ़तापूर्वक इस बात की शिक्षा देता है कि ईश्वर तथा उस की सृष्टि स्पष्टतः दो विभिन्न वस्तुयें हैं। ईश्वर न तो अपनी सृष्टि का एक भाग है न ही वह उस में मिश्रित है। उस की सृस्टि विशेष्ताओं में न तो उस के समान है न ही उस का एक भाग। ईश्वर की शान ही निराली है, वह सर्वमहान है, वह अपनी समस्त सृष्टि से ऊपर है। आकाश तथा अपनी सिंहासन से भी ऊँचा, जैसा कि उस ने पवित्र कुर्आन एवं प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों के माध्यम से अपने विषय में हमें सूचना दी है।

यह बात स्पष्ट होनी चाहिये, किन्तु मनुष्य का प्रतिपालक एवं रचयिता को त्याग कर सृष्टि की पूजा करना जिस सीमा तक भी हो वह वास्तव में अवज्ञानता, इंकार तथा असावधानता पर आधारित है।

﴾ईश्वरात्मा प्रत्येक स्थान पर अपनी सृष्टि में समाई हुई है अथवा वह सृष्टि का एक भाग है﴿ इस ग़लत आस्था ने लोगों को सृष्टि की उपासना का एक औचित्य प्रदान कर दिया है। दार्शनिक मूर्ति पूजा करने वाले मूर्ति पूजा का तर्क यह देते हैं कि : वास्तव में वह पत्थर अथवा धातु से बने उपकर्णों ﴾स्टेचुओं﴿ की उपासना नहीं करते, अपितु वह उस ईश्वर की उपासना करते हैं जो उपासना की रस्में अदा करते समय उस मूर्ति में समा जाता है। वह दावा करते हैं कि पत्थर की बनी हुई मूर्तियाँ तो केवल ईश्वरीय स्तित्व की आकार बिन्दु है न कि स्वयं वह ईश्वर हैं। जो भी इस आस्था को स्वीकार करता है कि ईश्वर कहीं किसी भी वस्तु में उपस्थित हो सकता है उसे मूर्ति पूजा के औचित्य में इस तर्क वितर्क को अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा।

वास्तव में किसी काल में अपने लिये जो ईश्वरत्व का दावा कर चुके हैं, उन के अधिकांश दावे इस गलत आस्था पर आधारित हैं कि ईश्वर

मनुष्य में समाया हुआ है इस आस्था को एक पग और आगे बढ़ाते हुये वह यह भी दावा करते हैं कि ईश्वर अन्य लोगों की तुलना उन में अधिक समाया हुआ है ।

कुछ मूर्ति पूजक मूर्ति पूजा का तर्क यह देते हैं कि मूर्तियाँ तो मात्र साधन है जो हमारे तथा परमेश्वर के मध्य सम्पर्क स्थापित करने का काम करती हैं । वास्तव में यह भी एक ग़लत आस्था है क्यों कि ईश्वर को लोगों और अपने बीच किसी माध्यम तथा सम्पर्क कर्ता की आवश्यक्ता नहीं । वह प्रतयेक वस्तु को सुनता तथा अपनी सृष्टि की आवश्यक्ताओं को भली भांति जानता है वास्तविक्ता यह है कि इस प्रकार का तर्कवितर्क एवं वादविवाद ईश्वर को सृष्टि के स्तर पर खींच लाने का व्यर्थ प्रयास है जो अधिक समय अपने कार्य समापन तथा उद्देश्य पूर्ति के लिये माध्यमों का प्रयोग करते हैं । कुर्आन की सौ से अधिक आयतों (मंत्रों) में अल्लाह लोगों को बिना किसी माध्यम की सहायता लिये अपने से प्रत्यक्ष संबन्ध

स्थापित करने का निमंत्रण देता है तथा स्वयं अपनी उपासन से हट कर किसी अन्य की उपासना करने को मनुष्य के लिये घोर पाप बताता है चाहे वह कितनी ही कड़ी परिस्थिति में और किसी औचित्य आधार ही पर क्यों न हो।

ईश्वर जो सर्वज्ञाता है, उस ने लोगों को ऐसे धार्मिक कार्यं नहीं बताये जो ईश्वर तथा मनुष्य के मध्य प्रत्यक्ष संबन्ध पर प्रभाव डालते हूँ, जैसे कि उस ने यह शिक्षा नहीं दी कि बपतिस्मा की आस्था रख्खी जाये, अथवा किसी मनुष्य के विषय में मसीहाई की आस्था रख्खी जाये या उसे माध्यम माना जाये। वास्तविक्ता यह है कि ईश्वर इस से कहीं महान तथा सर्वशक्तिमान है कि वह किसी ऐसे की कामना करे जो उसे नीचता दुर्बलता तथा तुच्छता के स्तर से नीचे पहुंचा दें। यह दावा करना कि ईश्वर ने स्वयं को अपमानित किया है तथा एक मनुष्य का रूप धार लिया है, अप्रत्यक्ष में यह दावा भी है कि ईश्वर शक्तिहीन तथा अकर्मठ होगया है। तथा यह दावा

करना कि उस ने मरने का निर्णय लिया, इस का अर्थ यह हुआ कि उस ने अपनी साधारण तथा कमज़ोर से कमज़ोर सृष्टि से भी अधिक शक्तिहीन होने का निर्णय लिया। इस का अर्थ यह भी हुआ कि जो उस की मृत्यु के पश्चात भी जीवित रहे उन्हें उस से भी महान होना चाहिये।

परिणाम स्वरूप ! साधारणत्यः समस्त झूटे धर्म ईश्वर के विषय में एक ही गलत आस्था रखते हैं कि ईश्वर तथा सृष्टि दोनों एक ही हैं। अब चाहे वह यह दावा करें कि सारे मनुष्य ही भगवान हैं अथवा कुछ विशेष लोग ही भगवान बनने योग्य हैं, अथवा प्रकृति ही ईश्वर है, अथवा ईश्वर मनुष्य की कालपनिक रचना है, अथवा मनुष्य ईश्वर तथा लोगों के मध्य संपर्क का कार्य करता है अन्य शब्दों में यह भी कहा जासकता है कि झूटे धर्म पूर्ण सृष्टि अथवा जिन में उन्हें ईश्वर की झलक दिखाई देती है उस को सहायता की दुहाई देकर स्रष्टा को छोड़ सृष्टि की उपासना की ओर बुलाते हैं।

6 : धर्मों के नाम

एक अन्य प्रमाण कि इस्लाम ही सत्य धर्म है वह इस्लाम शब्द के अर्थ ही से लिया जासकता है। मूल रूप से इस्लाम अरबी भाषा का एक शब्द है जिस का अर्थ पूर्ण आत्मसमर्पण तथा अनुसरण के हैं। धर्म के रूप में इस्लाम के दो अर्थ है एक साधारण, दूसरा विशेष। इस्लाम अपने साधारण अर्थ में उन समस्त आकाशीय धर्मो को सम्मिलित है जिसे विभिन्न कालों में विभिन्न ईश्दूतों ने परस्तुत किया तथा सब के संदेशों का केन्द्र बिन्दु यह था : मात्र एक ईश्वर की पूजा अरचना ﴾एकेश्वरवाद﴿ तथा मिथ्या उपास्यों ﴾अनेकेश्वरवाद﴿ से दूर रहना।

इस से स्पष्ट हो जाता है कि कुर्आन में वर्णित समस्त ईश्दूतों ने स्वयं को मुस्लिम क्यों कहा। [1] फिर भी (बहर कैफ) इस्लाम शब्द उस

[1]) परिणामस्वरूप जो इस्लाम से मुहम्मद ﷺ के लाये हुये नये धर्म के रूप में कोई संबन्ध नहीं रखना चाहता है उसे इसे (इस की मूल

विशेष धर्म को भी दर्शाता है जिसे अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद ﷺ को प्रदान किया गया, इस से पूर्व इस्लाम के अतिरिक्त किसी भी धर्म को विशेष रूप से ईश्वर की ओर से कोई नाम नहीं दिया गया।

इस्लाम किसी व्यक्ति विशेष, किसी दल अथवा लोगों के नाम पर नहीं रख्खा गया न ही बाद में आने वाले मानव समाज ने इस का नाम निश्चित किया है। अपितु इस्लाम स्वयं ईश्वर ही का प्रदान किया हुआ शुभ नाम है जिस का वर्णन स्पष्टतः कुर्आन की बहुत सी आयतों में हुआ है : (निःसंदेह अल्लाह के निकट लोकप्रिय धर्म केवल इस्लाम है) **[3:19]**

दूसरी दिशा ईसाईय्यत का नाम ईसा عليه السلام के बहुत बाद ईसाइयों की ओर से रख्खा गया। यहूदिय्यत का नाम यहूदा नामक कुटुंब अथवा व्यक्ति के नाम की देन है। कारण यह है कि जब

शिक्षाओं के आधार पर) इतिहास में समस्त ईश्दूतों की ओर भेजे गये मूल ईश्वरीय संदेश के रूप में तो अवश्य स्वीकार करना चाहिये।

हम बाइबिल का अध्ध्यन करते हैं तो पता चलता है कि इसहाक़ عليه السلام तथा मूसा عليه السلام के मानने वालों एवं उन की आने वाली नसलों को यहूदी का नाम कहीं नहीं दिया गया है न ही उन के धर्म को यहूदियत कहा गया है । इसी प्रकार ईसा [1] عليه السلام के मानने वालों के धर्म को ईसाइय्यत कहा गया हो । अन्य शब्दों में यहूदिय्यत तथा ईसाइय्यत की कोई ईश्वरीय अस्ल नहीं न ही इस का कोई आकाशीय प्रमाण है । ईसा عليه السلام को आकाश पर उठाये गये अभी कुछ ही समय हुये थे कि ईसा عليه السلام के अनुसरण का दावा करने वालों ने ईसा عليه السلام के लाये हुये धर्म को ईसाईय्यत का नाम दिया ।

यही कुछ बुद्धमत के साथ भी हुआ जिसे गौतम बुद्ध की मृत्यु के पश्चात यह नाम दिया गया, कंफ्यूशश के मृत्यु के पश्चात उन के

---

[1]) जीसस एवं काइस्ट दोनों ही नाम यूनानी तथा लातीनी भाषा हेब्रो से लिये गये हैं, जीसस यूनानी भाषा के शब्द 《'Iesous'》 का अंग्रेज़ी रूपांतर है जिसे हेब्रों में यशू कहा गया है । 'Christos' हेब्रो भाषा के शब्द मसीह 《'messiah'》 का यनानी अनुवाद है जिस का अर्थ है मरहम लगाया हुआ ।

विचारों को कंफ्यिूशियनिज़्म का नाम दिया गया। कार्ल मार्कस के विचारों को उस के मरने के पश्चात ही मार्क्सिज़्म का स्थान मिला तथा आर्यनों के भारत आने तथा सिन्ध वासियों के रंग और सिंध नदी के तट पर बसने वालों के नाम पर भारत वासियों को हिन्दू तथा उन के धर्म को हिन्दूमत का स्थान दिया गया।

7 : इस्लामी आस्था के 6 मूल आधार

इस्लामी आस्था मूल रूप से विश्वास के निम्नलिखित छ आधारों पर स्थिर है ।

1. **ईश्वर पर विश्वास : इस में निम्नलिखित वस्तुओं की आस्शा रखना अनिवार्य है :**
   - अल्लाह के अस्तित्व पर ईमान । मानवजाति तथा सर्वलोक की उपस्थिति यह किसी घटना की देन अथवा सहज पैदावार नहीं, धर्ती आकाश तथा उन के मध्य पाई जाने वाली समस्त वस्तुयें किसी महान स्रष्टा एवं प्रतिपालक के अस्तित्व को दर्शाती हैं ।
   - इस बात का विश्वास कि ईश्वर ही वास्तविक रचयिता एवं जन्मदाता है, वही प्रतिपालक, धर्ती आकाश तथा उन के मध्य पाई जाने वाली समस्त

वस्तुओं का स्वामी, वही प्रत्येक वस्तु का प्रदान करने वाला तथा हमारी समस्त आवश्यक्ताओं की पूर्ति करने वाला है, जीवन मृत्यु उसी के हाथ में है ।

- इस बात की आस्था कि ईश्वर ही एकमात्र शक्ति है जो समस्त प्रकार की उपासना किये जाने का अधिकार रखती है ।
- इस बात की आस्था रखना कि ईश्वर के नाम एवं उस के गुण मात्र उसी के लिये हैं एवं केवल उसी को शोभा देते हैं ।

2. फरिश्तों पर विश्वास :

फरिश्ते भी ईश्वर की रचना हैं जिन्हें इस संसार में विशेष कार्यों के समापन के लिये जन्म दिया गया है । साधारणत्यः वह अदर्शीय सृष्टि है, उन की अपनी कोई चाहत नहीं होती, वह वही करते हैं जिस का उन्हें ईश्वर आदेश देता (वह

समस्त कार्य ईश्वर के आदेशानुसार ही करते हैं) वह पूजा योग्य नहीं। हज़रत जिब्रील عليه السلام ईश्दूतों तक ईश्वर का संदेश पहुंचाने पर नियुक्त हैं प्रत्येक व्यक्ति के संग सदैव दो फरिश्ते रहते हैं जो उन के सद्कार्यों तथा दुष्कार्यो को रिकार्ड पर लाते हैं। एक अन्य फरिश्ता प्रत्येक मनुष्य के साथ सद्कार्यों में उस का साहस बढ़ाने के लिये नियुक्त है।

एक अन्य फरिश्ता गर्भ के चौथे महीने के अन्त में बच्चे में प्राण डालने पर नियुक्त है, कुछ अन्य फिरिश्ते अल्लाह की अनुमति से प्राण निकालने पर नियुक्त हैं। इस के अतिरिक्त बहुत सारे ऐसे फरिश्ते हैं जो विभिन्न कर्तव्यों की पूर्ति पर नियुक्त हैं जिन्हें गिनाना इस छोटे सी पुस्तिका [1] में संभव नहीं।

---

[1]) विस्तार के लिये (तीन मूल आधारों की व्याख्या) नामी पुस्तक का अध्यन कीजिये जिसे शैख मुहम्मद बिन सालेह उषैमीन रहिमहुल्लाह ने लिखा है तथा बर्तानिया की अल हिदायह प्रकाशन ने प्रकाशित किया है।

3. आकाशीय धर्म ग्रन्थों पर विश्वास :

ईमान का यह भाग अल्लाह की ओर से अपने दूतों को भेजे गये समस्त मूल रूपी धर्म शास्त्रों पर ईमान लाने को अनिवार्य बताता है। यह धर्म शास्त्र उस आलोक का एक भाग हैं जिसे ईश्दूतों ने लोगों को ईश्वर का सत्य मार्ग दिखाने के लिये अपने ईश्वर से प्राप्त किया था। समस्त अवतरित धर्म ग्रन्थ मात्र एक ईश्वर ही की उपासना करने तथा उस की उपासना में किसी अन्य को साझीदार न बनाने की शिक्षा देते हैं। हाँ यह अन्य बात है कि राष्ट्र, जाति, दल, समुदाय, तथा भुगोलीय अन्तर के आधार पर इन धर्म शास्त्रों की कुछ शिक्षाओं में भी परस्पर भिन्नता पाई जाती है जो ईश्वर की महान नीतियों के अनुकूल है।

एक मुसलमान कुर्आन में दी गई निम्नलिखित किताबों पर विश्वास रखता है : इब्राहीम عليه السلام को दी गई पुस्तिकायें। तौरात जो

मूसा عليه السلام पर उतारी गई। ज़बूर, जो दाऊद عليه السلام पर अवतरित की गई। इंजील जो ईसा عليه السلام पर उतारी गई। एक मुसलमान इन ग्रन्थों के मूल संकलन ही को सत्य मानता है, अन्यथा उस की आस्था है कि नबी करीम عليه السلام के ईश्दूत बनाये जाने से बहुत पूर्व यह ग्रन्थ या तो खो गये अथवा बाद की नसलों ने शताब्दियों पूर्व इन में घोर परिवर्तन कर दिया। इन ग्रन्थों में सत्य असत्य, सही झूट तथा अनर्गल को परस्पर गडमड कर दिया गया है। जिन में मूर्ति पूजा, अतर्कीय आस्थायें, तथा दार्शनिक सिद्धान्त भी सम्मिलित कर दी गई हैं वास्तव में जिन का मूल आकाशीय धर्म ग्रन्थों से कोई संबन्ध नहीं। इन पुस्तकों की विचार धाराओं में परस्पर पर्याप्त टकराव पाया जाता है। यही कारण है कि इन शास्त्रों की मूल खिक्षायें अधिक समय तक बाक़ी न रहीं बलकि मिथ्या की मोटी पर्तों तले लुप्त होगईं। उदाहरण स्वरूप ईसाईय्यत में ईसा عليه السلام की मृत्यु के **400** वर्षों पश्चात ही एकेश्वरवाद की आस्था का

त्रीश्वरवाद में परिवर्तित होजाना स्पष्टतः ईसाई आस्था के पतन [1] को दर्शाता है।

[1]) इस विषय के संदर्भ में अधिक जानकारी के लिये देखिये : (ईसा ﷺ का सत्य संदेश), (ईसा ﷺ इस्लाम के दूत), (ईश्वर के शारीरिक रूप में आने का अनर्गल)

दिव्य कुर्आन

अल्लाह जो अति कृपावान तथा दयालु है, उस ने मनुष्य को बिना किसी पवित्र एवं स्पष्ट मार्गदर्शन के यूँ ही व्यर्थ भटकने के लिये नहीं छोड़ दिया है। उस ने कुर्आन जैसी दिव्य एवं आलौकिक धर्म शास्त्र उतारी है एवं उस की सुरक्षा का पर्याप्त प्रबन्ध भी किया है जो शेष संसार के लिये प्रत्येक समय अपने भीतर मार्गदर्शन का भंडार रखता है। जो ईश्वर की ओर से उतारी जाने वाली निर्णयजनक अन्तिम ईश्वाणी है। वास्तव में कुर्आन अल्लाह के वह शब्द हैं जिन्हें अल्लाह ने जिबरील ﵇ के माध्यम से अपने पवित्र ईश्दूत मुहम्मद ﷺ को प्रदान किया था। यह थोड़ा थोड़ा करके 23 वर्षों के समय काल में अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद ﷺ पर उतारा गया। मुहम्मद ﷺ ने अपने जीवन ही में पूरे कुर्आन को अपने साथियों की सहायता से लिखित रूप दे दिया था। समस्त कुर्आन नबी करीम ﷺ के

जीवन ही में खजूर की पत्तों, चमड़े, हड्डी पत्थर आदि पर लिख कर सुरक्षित कर लिया गया था। इस के अतिरिक्त उसी समय संपूर्ण कुर्आन को मुहम्मद ﷺ के बहुत सारे साथियों ने कंठस्थ भी कर लिया था।

मुहम्मद ﷺ के देहान्त के मात्र एक वर्ष पश्चात मुसलमानों के प्रथम खलीफा हज़रत अबू बकर ﷺ ने नबी करीम ﷺ के साथियों को संपूर्ण कुर्आन को केवल एक जिल्द में एकत्रित करने का आदेश दिया। फिर मुसलमानों के तीसरे खलीफा हज़रत उसमान ग़नी ﷺ ने मूल कुर्आन की कई कापियाँ तैय्यार करवाईं तथा उन्हें इस्लामी संस्कृति के महान केन्द्रों को भेज दिया। उस समय से अब तक अर्थात चौदह सौ छब्बीस वर्ष से निरंतर बिना किसी परिवर्तन के वही कुर्आन लोगों के हाथों में है। शब्द, कम तथा भाषा सब कुछ हू बहू वही है जो नबी करीम ﷺ ने अपने साथियों को लिखवाये थे। कुर्आन के नाज़िल होने से लेकर अब तक कुर्आन की 114 सूरतों में किसी शब्द

मात्र में परिवर्तन नहीं हुआ । साथ ही क़ुर्आन ही में अल्लाह ने स्वयं इस की सुरक्षा का वचन दिया है, अल्लाह का फ़र्मान है : वास्तव में क़ुर्आन को हम ही ने उतारा है तथा हम ही इस की सुरक्षा करने वाले हैं । [1] **(15:9)**

क़ुर्आन करीम के विषय में एक मौलिक बात जिसे समझने की आवश्यक्ता है वह यह कि दिव्य क़ुर्आन अवतरण तथा विषय दोनों दृष्टि से एक ईश्वरीय चमत्कार है । क़ुर्आन करीम के अवतरण काल से लेकर अब तक कुछ एसे लोग हैं जिन्हों ने क़ुर्आन करीम के ईश्वरीय होने तथा उस के चमत्कृत स्वभाव एवं गुणों का यह कह कर इंकार किया है कि : या तो मुहम्मद ﷺ को यह बातें किसी और ने सिखाई हैं अथवा आप ने इन्हें स्वयं लिख लिया है । उन के इस आरोप का

---

[1]) मुहम्मद ﷺ की शिक्षायें क़ुर्आनी आयतों का खुलासा तथा व्याख्या करती हैं, वह नबी करीम ﷺ की उपासना शैली को भी विस्तार पूर्वक परस्तुत करती हैं । नबी करीम ﷺ की इन शिक्षाओं को आप ﷺ के साथियों ने बड़े परिश्रम तथा बड़ी सूक्षमदर्शिता के साथ एकत्रित किया था ।

खण्डन करते हुये अल्लाह ने पूर्ण ब्रम्हाण्ड के लोगों को चुनौती दी और फ़र्माया : **यदि मेरे दास मुहम्मद ﷺ पर हमारी उतारी हुई किताब के विषय में तुम्हें कोई संदेह है तो तुम इस जैसी एक सूरत ही लाकर दिखाओ एवं अल्लाह के अतिरिक्त अपने सहयोगियों को भी बुला लो यदि तुम अपने दावे में सच्चे हो |** (2:23)

यह कुर्आन करीम की भविष्यवाणी थी जो शत प्रतिशत पूरी हुई, फलस्वरूप मुहम्मद ﷺ के काल से लेकर अब तक कोई इस योग्य नहीं हो सका कि कुर्आन करीम जैसी एक छोटी सी सूरत भी ला सके यहाँ तक कि कोई कुर्आन जैसी एक आयत तक न बना सका |

4. ईश्दूतों पर ईमान ﴾विश्वास﴿ लाना :

ईमान का यह आधार इस आस्था को दर्शाता है कि ईश्वर ने संसार वालों के समक्ष अपना संदेश चुने हुये लोगों के माध्यम से परस्तुत

किया है। इन महान विभूतियों को जिन्हें ईश्दूत कहा जाता है इन्हें ईश्वर ने इस कारण चुना ताकि वह मानव समाज के समक्ष यह उदाहरण परस्तुत कर सकें कि किस प्रकार ईश्वरीय पवित्र ग्रन्थों को समझ कर उन के अनुसार अमल किया जाये। ईश्वर ने प्रत्येक समुदाय में अपने संदेष्टा भेजे ताकि लोगों को यह संदेश दिया जाये कि मात्र वही वास्तविक उपासना, पूजा तथा अराधना के योग्य है। उस के अतिरिक्त अथवा उस के साथ किसी अन्य की उपासना करना गलत है, अत्याचार है।

कुर्आन में केवल पच्चीस ईश्दूतों के नाम आये हैं साथ ही इस बात का संकेत भी दे दिया गया है कि इन के अतिरिक्त और बहुत से ईश्दूत भेजे गये हैं जिन का नाम नहीं बताया गया है। इन में सर्वप्रथम नबी मानवजाति की आधारशिला हज़रत आदम ﵇ है तथा अन्तिम ईश्दूत हज़रत मुहम्मद ﷺ हैं। मुहम्मद ﷺ के अतिरिक्त प्रत्येक नबी विशेष समुदाय में विशेष समय काल के लिये

भेजा गया, अपितु मुहम्मद ﷺ अन्तिम समय तक संपूर्ण ब्रम्हाण्ड के लोगों की ओर ईश्दूत बना कर भेजे गये। आप की जीवनी में इस बात के हज़ारों से भी अधिक उदाहरण मौजूद हैं कि मुहम्मद ﷺ ईश्दूत हैं। सर्वमहान उदाहरण तो वह पवित्र चमत्कारी धर्म शास्त्र है जिसे मुसलमान दिव्य कुर्आन के शुभ नाम से जानते हैं, जिसे केवल ईश्दूत के माध्यम ही से प्राप्त किया जासकत है। वास्तविक्ता यह है कि नबी करीम के आगमन का वर्णन काफी कुछ परिवर्तन के बावजूद आज भी बाइबिल में मिल सकता है। अधिक जानकारी के लिये देखिये : ﴾डियूट : **18:18, 18:15;** ईसाइयाह : **29:12;** सुलैमान عليه السلام की गाथा : **5:16;** जान : **16:12-14 ;** जान : **14: 15-16**﴿

5. अन्तिम दिवस पर ईमान ﴾विश्वास﴿

इस्लाम यह शिक्षा देता है कि सांसारिक जीवन मनुष्य के लिये मात्र परीक्षा है ताकि देखा जाये कि वह ईश्वर के आदेशों का पालन करता हैं या नहीं। तत्पश्चात अन्तिम दिन लोगों को

पुनः जीवित किया जायेगा और उन्हें ईश्वर के समक्ष खड़ा होना होगा । ताकि संसार में किये गये उन के कर्मों का हिसाब किया जासके और उन्हें उन का बदला मिल सके ।

सत्कर्मियों को महान सम्मान मिलेगा एवं उन का बड़े ही उल्लास व उत्साह के साथ ईश्वर के स्वर्ग में स्वागत होगा । इस के विपरीत जिन्हों ने दुष्कार्य किये हुंगे उन्हें कठोर दण्ड देकर नर्क में फेंक दिया जायेगा । इसी कारण संसार ही में प्राकृतिक तथा धार्मिक दोनों रूप से लोगों को सही गलत, सत्य और असत्य का ज्ञान दे दिया गया है । फिर उन्हें इस संक्षिप्त जीवन में अपने लिये सत्य अथवा असत्य मार्ग का चयन करना है मार्ग का सांसारिक चुनाव ही अन्त में लोगों के गंतव्य स्थान का वास्तविक चयन करता है । अल्लाह का फर्मान है : जिस ने कण समान भी कोई पुण्य किया होगा उसे वह अवश्य देखेगा एवं

जिस ने भी कण मात्र पाप किया होगा वह उसे अवश्य देखेगा ।[1]

न्याय दिवस पर ईमान मनुष्य के ह्रिदय में ईश्वर की चेतना तथा विवेक को जागरूक बनाता है । मनुष्य तथा समाज दोनों को बिना किसी बाहरी दबाव के विश्वास के साथ ईश्वर की आज्ञापालन का कर्तव्य सिखा देता है ।

6. भाग्य पर ईमान ﴾विश्वास﴿

इस में निम्नलिखित वस्तुओं पर आस्था रखना सम्मिलित है :

a) अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ज्ञान रखता है, उस का ज्ञान किसी कालमात्र तक सीमित नहीं है । उसे भूतकाल,वर्तमानकाल तथा भविष्यकाल का समानतः ज्ञान है ।

b) उत्पन्न होने अथवा जन्म लेने वाली प्रत्येक वस्तु सुरक्षित पट्ट नामी पुस्तक में पहले ही से लिखी हुई है ।

---

[1]) कुर्आन (99:7-8)

c) ईश्वर ही ने प्रत्येक वस्तु की रचना की है, यहाँ तक कि लोगों के सदकार्यों तथा दुष्कार्यों का रचयिता भी वही है। परन्तु उस ने लोगों को सद्कार्य करने तथा दुष्कार्य से बचने का आदेश दिया है।

d) मनुष्य को इस बात का दृढ़ विश्वास होना चाहिये कि संसार में घटने वाली प्रत्येक घटना अल्लाह के आदेशों की अधीन है। उस की अनुमति के बिना संसार में किसी वस्तु का स्थान पाना असंभव है।

चेतावनी : इस बात पर भी ध्यान देना चाहिये कि वस्तुओं के विषय में ईश्वर का सर्वज्ञान लोगों से उन की इच्छा अथवा चुनावाधिकार नहीं छीनता। इस का वास्तविक अर्थ यह है कि मनुष्य आज जिस वस्तु का चुनाव करता है उस का ज्ञान ईश्वर को उस के चुनावानुसार कार्य करने से बहुत पहले ही से है।

इस्लाम के मूल आधार

इस्लाम में उपासना का अर्थ प्रत्येक उस कथनी तथा कर्नी को सम्मिलित है जो सर्वशक्तिमान ईश्वर को प्रिय हैं । उपासना प्रत्येक वह कार्य है जिसे ईश्वर की प्रसन्नता के लिये उस के आदेशानुसार किया जाये । परन्तु सर्वमहान पाँच उपासनायें हैं, जिन पर आध्यात्मिक जीवन का आधार है तथा उन्हीं पर इस्लाम का भवन टिका हुआ है । निम्न में हम उन्हीं की चर्चा करेंगे ।

1. विश्वास के दो उद्घोषण जिन का अनुवाद अर्बी भाषा में इन शब्दों में किया गया है :

﴾अश्हदु अन् ला इलाह इल्लल्लाह, व अश्हदु अन्न मुहम्मदन रसूलुल्लाह﴿ जिस का अर्थ यह है कि : मैं इस बात का साक्षी हूँ कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं तथा मैं इस बात का भी साक्षी हूँ कि मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल हैं । इस प्रकार एकेश्वरवाद का बेलाग उद्घोषण तथा

मुहम्मद ﷺ के ईश्दूतत्व की स्वीकृति, साथ ही स्वयं नबी करीम ﷺ की शिक्षाओं की स्वीकृति मनुष्य को इस्लाम की शीतल छाया में ले आती है तथा उसे स्वर्ग की गारन्टी प्रदान करती है। ज्ञात हुआ कि ऐकेश्वरवाद इस्लाम का मूल आधार तथा महत्वपूर्ण संदेश है।

2. सलात ﴾नमाज़﴿ : मूल रूप से नमाज़ प्रत्येक व्यस्क पुरूष महिला पर दिन रात में पाँच बार अनिवार्य है, जिन का समय कुछ इस प्रकार है : फज्र : इस का समय सुब्ह सादिक़ से सूर्योदय तक है। ज़ोहर : इस का समय सूरज ढलने से लेकर जब प्रत्येक वस्तु की छाया उस के समान होजाये, तक है। अस्र : इस का समय ज़ोहर के समय की समाप्ति से लेकर प्रत्येक वस्तु की छाया उस के दो गुना होजाने तक है। मग़्रिब : इस का समय सूर्यास्त से लेकर पश्चिम की दिशा पाई जाने वाली लालिमा के समाप्त होते तक है। इशा : इस का समय लालिमा की समाप्ति से लेकर आधी रात तक है। एक मुस्लिम को संसार में कही रहे

प्रत्येक स्थिथि में अनिवार्य नमाज़ें अदा करनी हैं। पुरूष मस्जिद में जमाअत ﴾सामूहिक दल﴿ के साथ नमाज़ अदा करेंगे, इस के विपरीत महिलाओं को अपने घरों में नमाज़ पढ़ने का आदेश तथा प्रोत्साहन दिया गया है।

नमाज़ मनुष्य को अल्लाह से निरंतर जोड़े रखती है, जिस के कारण उन्हें पापों से दूर रहने में सहायता मिलती है, साथ ही यह निर्धन तथा धनवान, राजा प्रजा, काले गोरे को एक ही पंक्ति में एक समान ला खड़ा करने का महान साधन तथा निशान है, सब मिल कर पंक्ति में एक साथ कंधे से कंधा और पाँव से पाँव मिलाकर खड़े होते हैं, और सभी अल्लाह के समक्ष शीष नवाते तथा सजदह करते हैं। नमाज़ अल्लाह पर विश्वास की शक्ति को उत्पन्न करती तथा मनुष्य को महान सदाचारों, व्यवहारों की दिशा अग्रसर करती है। यह ह्दिय पवित्रता में बड़ी सहायक तथा पापों, बुरे कार्यों में उलझने से बचाती है।

<u>3. ज़कात :</u> प्रत्येक मुस्लिम जिस की वार्षिक बचत एक विशेष सीमा ﴾85 ग्राम सोने की क़ीमत﴿ से अधिक हो तो उसे अपनी बचत का 2.5% प्रत्येक वर्ष समाज के निर्धनों तथा आवश्यक्ता रखने वालों को अदा करना होगा। ज़कात मनुष्य में दानशीलता की भावना को प्रवान चढ़ाती है, तथा लालच एवं स्वार्थपरता से अत्मा को पवित्र करने में अति सहायक है। इसी प्रकार ज़कात समाज में अमीर और ग़रीब के मध्य बढ़ती खाई को पाटने तथा परस्पर ईर्ष्या एवं शत्रुता को कम करने का भी एक उत्तम साधन है

4. रमज़ान के रोज़े रखना : इस्लाम में रोज़ा रखने का अर्थ यह है कि सुबह से शाम तक प्रत्येक खाने पीने वाली वस्तुओं तथा स्त्रीगगमन एवं संभोग संबन्धी समस्त कार्यों से दूर रहना। यह रमज़ान के महीने में अदा की जाने वाली वार्षिक अनिवार्य उपासना है। रोज़ा इख्लास की शिक्षा एवं निःस्वार्थता को उन्नति देता है। इस से मनुष्य में समाज सेवा की भावना उत्पन्न होती है तथा

सामाजिक चेतना, धैर्य, आत्मनियंत्रण, इच्छा शक्ति तथा समाज के निर्धनों से प्रेम भावना को बढ़ावा मिलता है। तद्अधिक चिकित्सा जगत ने प्रमाणित किया है कि रोज़ा मनुष्य की उत्तम स्वास्थ की सुरक्षा में बड़ा सहायक है।

5. हज्ज करना : हज्ज प्रत्येक मुसलमान पर जीवन में एक बार अनिवार्य है, यदि वह आर्थिक तथा शारीरिक रूप से इस की शक्ति रखता है। हज्ज के समय संसार के कोने कोने से मुसलमान पुरूष महिलायें एक भव्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के रूप में अल्लाह की उपासना के लिये एकत्रित होते हैं। यह धर्य की एक महान शिक्षा है। हज्ज का यह महान सम्मेलन प्रलय दिवस की याद दिलाता है जब लोग अपने हिसाब व किताब के लिये अल्लाह के समक्ष एकत्रित हुंगे। इस से इस विश्वास को और भी शक्ति मिलती है कि ब्रम्हाण्ड के समस्त मुसलमान देश,भाषा, वंश और भुगौलिक सीमाओं की कैद से स्वतंत्र परस्पर भाई भाई हैं।

इस्लाम तथा अन्य धर्म

कोई यह प्रश्न कर सकता है : ﴿ यदि सारे सत्य धर्मों ने एक ही शिक्षा और संदेश परस्तुत किया, विशेष कर मात्र एक अल्लाह की उपासना की शिक्षा सब ने दी, फिर हम उन में परस्पर मतभेद क्यों देखते हैं ? इस का उत्तर यही है कि इन संदेशों तथा शिक्षाओं का मूल रूप या तो खो गया या बाद की आने वाली नस्लों ने उन्हें परिवर्तित कर दिया।

इस प्रकार एकेश्वरवाद की मूल शिक्षा क़िस्से कथाओं, खुराफात, मूर्ति पूजा, बुद्धिरहित दार्शनिक आस्थाओं में लुप्त होगई, परिणाम स्वरूप वह सारे धर्म अधिक योग्य नहीं रह गये, किन्तु अति कृपावान अल्लाह ने मानवजाति को पथभ्रष्ट होने के लिये नहीं छोड़ दिया। उस ने तुरंत अन्तिम दूत मुहम्मद ﷺ को भेजा ताकि आप लोगों को भूला पाठ पढ़ायें और उन्हें मूल संदेश की याद दिलायें तथा मानवजाति को सत्य मार्ग

पर वापस आने का निमंत्रण दें। जिस का सारांश यह है कि एकेश्वरवाद की आस्था रखते हुये कुर्आन की शिक्षानुसार उस की उपासना की जाये इस कारण इस्लाम समस्त धर्मों में अन्तिम धर्म और कुर्आन समस्त आकाशीय ग्रन्थों में अन्तिम ग्रन्थ तथा मुहम्मद ﷺ समस्त ईश्दूतों में अन्तिम दूत हैं।

इस्लाम का सौन्दर्य तथा उस की विशेष्तायें

पूरा कुर्आन ही एकेश्वरवाद की स्पस्ट शिक्षाओं से भरा हुआ है, कुर्आन की कुछ आयतें अल्लाह के बारें में सूचित करती हैं तो कुछ उस के नामों, उस की विशेष्ताओं, उस के कर्मों तथा कथनों को विस्तारपूर्वक परस्तुत करती हैं। यह सारी आयतें ईश्वर के सोहने नामों और उस की महान विशेष्ताओं को सम्मान देते हुये एकेश्वरवाद को दर्शाती हैं।

अन्य आयतें बिना किसी को शरीक और साझी बनाये मात्र एक ईश्वर की उपासना की आवश्यक्ता की ओर लोगों को आमंत्रित करती हैं, तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी अन्य की उपासना का इनकार करने की आवश्यक्ता पर बल देती हैं। इन आयतों में मात्र एक ईश्वर की उपासन को बड़ी महत्वपूर्ण शैली में दर्शाया गया है साथ ही बताया गया है कि लोगों के लिये आवश्यक है कि वह अपने उद्देश्यों, कामनाओं, प्रार्थनाओं में अपने रब को अकेला मानें तथा मात्र उसी की दिशा आकर्षित हूँ।

कुर्आन आदेशों तथा अनादेशों पर भी आधारित है अर्थात आदेशानुसार किसी काम का करना तथा किसी से दूर रहना एकेश्वरवाद को प्रमाणित करने के महत्वपूर्ण साधन तथा उस की पूर्ति के महान प्रतीक हैं। साथ ही कुर्आन में सत्य आस्थायें रखने वालों की कथायें और उन की शुभ सूचनायें, संसार ही में उन की सफलता की बात और अंतिम दिवस के वर्दान का वर्णन भी बड़ी

लुभावनी शैली में मिलता है । कुर्आन में उन लोगों की कथायें भी हैं जिन्हों ने अल्लाह के साथ शिर्क किया और उस की उपासना में दूसरों को साझीदार बनाया । फिर कुर्आन ने सांसारिक जीवन में उन्हें मिलने वाली यात्नाओं का भी वर्णन किया और बताया कि अंतिम दिवस को परिणाम स्वरूप उन्हें कितने कठोर दण्ड का सामना करना होगा। यह प्रत्येक उस व्यक्ति का परिणाम है जिस ने अल्लाह के साथ शिर्क किया और एकेश्वरवाद को अस्वीकार किया, उस से दूर रहा।

कुर्आन लोगों को अपने प्रतिपालक के साथ उत्तम संबन्ध स्थापित करने तथा उन्हें सीधा और स्वच्छ बनाने की निमंत्रण देता है। साथ ही उन्हें इस बात की शिक्षा भी देता है कि परस्पर अपने संबन्ध उत्तम बनायें। कुर्आन की महत्वपूर्ण शिक्षा यह भी है कि अनदर बाहर दोनों स्थानों पर लोग अपने सेवकों के साथ उत्तम व्यवहार करें।

अपने प्रतिपालक के साथ संबन्ध स्थापित करने या उसे उत्तम बनाने के संदर्भ में कुर्आन लोगों को आमंत्रित करता है कि वह नमाज़, हज्ज एवं कुर्बानी जैसी शारीरिक तथा आथिर्क दोनों प्रकार की उपासनाओं से उस की निकटता प्राप्त करने का प्रयास करें, साथ ही कुर्आन लोगों को निमंत्रण देता है कि वह ईश्वर के महान तथा अछूते नामों तथा विशेष्ताओं के माध्यम से उस का सत्य ज्ञान प्राप्त करें ताकि इस प्रकार लोगों के दिलों में अल्लाह का भय बैठ जाये। कुर्आन लोगों के दिलों में अल्लाह के आदेशों तथा नियमों के पालन तथा उस की अवैध की हुई वस्तुओं से दूर रहने की भावना उत्पन्न करता एवं उसे अनुशासनबध्ध बनाता है, इस प्रकार उसे लोगों का अपने प्रतिपालक के साथ संबन्ध उत्तम बनाने में सहायक बनने का गौरव प्राप्त हो जाता है।

परस्पर संबन्ध स्थापित करने और उसे उत्तम बनाने के संदर्भ में कुर्आन लोगों को ऐसा व्यवहार अपनाने की शिक्षा देता है जिस से

सामाजिक सम्बन्धों को शक्ति प्रदान हो, और इस प्रकार क़ुर्आन ने घरेलू जीवन चर्या को बड़ी महत्व दी। माता पिता के संग उत्तम व्यवहार, उन की सेवा, घर के अन्य लोगों से उत्तम सम्बन्ध बनाये रखना, पत्नी संतान के अधिकारों की सुरक्षा एवं उन की आवश्यक्तओं की पूर्ति, पड़ोसियों के साथ उत्तम व्यवहार यह सब क़ुर्आन की अनिवार्य शिक्षायें हैं। जब कि माता पिता की अवज्ञापालन, घरेलू सम्बन्ध विच्छेद करना एवं सामाजिक बाइकाट सब के सब अवैध और नाजायज़ हैं।

क़ुर्आन की शिक्षा यह भी है कि पति पत्नी के मध्य कलह तथा विवाद की स्थिति में उन के बीच सुल्ह सफाई करा दी जाये ताकि घर टूटने और बिखरने से बच जाये और संतान के सिर पर माता पिता की शीतल छाया बाक़ी रहे।

साथ ही क़ुर्आन इस बात की भी शिक्षा देता है कि संपूर्ण ब्रम्हाण्ड के लोगों के साथ बड़े उत्तम व्यवहार तथा महान सदाचारों का प्रदर्शन करना

चाहिये जैसे लोगों को देख कर उन्हें मुस्कान देना, उन से अति कोमलता से बात करना, क्रोध आने पर अपने आप पर सैंयम रखना, दोषी पाये जाने की स्थिति में लोगों को क्षमा कर देना, बुराई और नुक़सान का बदला भलाई और एहसान से देना। दिल से प्रत्येक प्रकार की ईर्ष्या और घृणा को दूर कर देना, घृणा को स्नेह से, शत्रुता को प्रेम से बदल देना। यह सब क़ुर्आन की मौलिक शिक्षायें हैं, जो इन्हें बढ़ावा देगा उसे अल्लाह की ओर से सम्मान और महान पुरस्कार का वर्दान है।

अन्तिम ईश्दूत मुहम्मद ﷺ की यह शिक्षा है कि पशुओं के साथ भी सद्व्यवहार होना चाहिये, उन पर दया करनी चाहिये। समय पर उन्हें खाना पानी देना चाहिये और उन की शक्ति से बढ़ कर उन से सेवा नहीं लेना चाहिये। आप ने यह शुभ सूचना भी दी कि ऐसा करने वाले प्रलय के दिन पुरस्कृत किये जायेंगे। आप की यह शिक्षा भी है कि पशुओं को यात्नायें नहीं देना चाहिये न ही अनावश्यक उन्हें सताना चाहिये, अबोध

जानवरों की हत्या करने से भी आप ﷺ ने मना फ़र्माया। रहे वह पशु जिन का गोश्त खाया जाता है, उन्हें भी ज़बह करते समय आराम पहुंचाने की चेष्टा करनी चाहिये, तथा उन्हें अन्य पशुओं के सामने ज़बह नहीं करना चाहिये।

कुर्आन शारीरिक तथा आध्यात्मिक दोनों प्रकार की पवित्रता की शिक्षा देता है। वह शरीर, कपड़े एवं जूतों की सफाई तथा सुगन्ध के प्रयोग का प्रोत्साहन करता है, उस की यह शिक्षा है कि प्रत्येक जुमा के दिन श्नान करना अनिवार्य है, इसी प्रकार स्त्रीगमन तथा संभोग के पश्चात भी श्नान आवश्यक है। नमाज़ से पूर्व वज़ू करना भी आवश्यक है कि इस के बिना नमाज़ नहीं होती। नाखुन काटना, बग़ल के बालों को उखेड़ना, नाभि के नीचे बालों की सफाई, मूँछों के बाल काटना, रोज़ाना दातुन करना, और शौच जाने के बाद विशेष अंगों को धोना इस्लाम की महत्वपूर्ण दैनिक शिक्षायें हैं।

आध्यात्मिक पवित्रता के सम्बन्ध में कुर्आन की यह शिक्षा है कि आत्मा की शुद्धीकरण होनी चाहिये, ह्रिदय को प्रत्येक प्रकार की ईर्ष्या, घृणा, अभिमान व गर्वअहंकार तथा अत्याचार से पवित्र होना चाहिये। कुर्आन ह्रिदय शांति कल्याण एवं प्रेम स्नेह तथा लोगों के संग मानवता का व्यवहार करने की ओर बुलाता है। उस की यह शिक्षा है कि ज़बान को झूट, ग़ीबत, गाली गुलूज, अपशब्दता मानहीनता तथा लोगों के अपमान से दूर रखा जाये। उसे सत्यवादी तथा मधुरभाषी होना चाहिये।

अश्लील चित्रों तथा लोगों के गुप्तांगों को देखने से आँखों की सुरक्षा होनी चाहिये, कानों को अश्लील तथा अनैतिक बातें सुनने से दूर रखना चाहिये। कुर्आन ज्ञान की प्रशंसा तथा प्रोत्साहन करता तथा अज्ञानता की यह कहते हुये कठोर निंदा करता है कि अज्ञानता बर्बादी का कारण है। वह कर्म तथा श्रम की सराहना करता तथा निरुद्यम, आलस्य एवं मन्दता को अवैध बताता है

इसी प्रकार कुर्आन समस्त प्रशंसनीय व्यवहारों, सदाचारों तथा विकास शक्तियों, कर्मठ जातियों की ओर बुलाता है।

कुर्आन वैध वैवाहिक सम्बन्धों के आधार ही पर संतान पैदा करने का आदेश देता है। उस की यह शिक्षा है कि कामशक्ति पर नियन्त्रण रखा जाये एवं उसे उस की वैध रेखाओं से बाहर न जाने दिया जाये। पति आवश्यक महर देकर ही विवाह करे तथा अपनी पत्नी एवं संतान की आर्थिक सहायता करे एवं उन के साथ सद्व्यवहार से पेश आये।

इसी प्रकार कुर्आन दुष्कार्यों तथा व्यभिचार को उस के समस्त साधनों के साथ अवैध बताता है इस लिये कि यह लोगों की मान मर्यादा, उनकी प्रतिष्ठा को मिट्टी में मिलाने तथा उन पर अत्याचार करने का एक निकृष्टतम प्रयास है, और कभी कभी इस से प्राँणघाती रोग तथा अवैध संतान भी जन्म लेते हैं जो किसी भी समाज के लिये महान तथा जटिल समस्या बन जाते हैं।

इसी संदर्भ में कुर्आन उन सारी वस्तुओं को अवैध बताता है जो व्यभिचार तथा अवैध सम्बन्धों की दिशा लेजाने वाले हूँ । अतः वह अश्लील चित्रों, चलचित्रों को देखने तथा विवाहयोग्य युवतियों के साथ एकांत में जाने से रोकता है । कुर्आन इस बात का भी आदेश देता है कि पुरूष अपनी आँखें नीची रखें तथा अर्धनग्न महिलाओं को देखने से बचें, इसी प्रकार महिलाओं को आदेश देता हैं कि वह लज्जापूर्वक पर्दे से रहें तथा पूरे शरीर को ढकने वाले कपड़ों का प्रयोग करें ।

कुर्आन लोगों की आत्मसुरक्षा एवं सम्मान का भी बड़ा महत्वपूर्ण संविधान प्रस्तुत करता है, उस की यह विशेष शिक्षा है कि किसी निर्दोष की जान लेना एक महान तथा क्रूर अपराध है । नबी करीम ﷺ ने जब मरे हुये पशुओं की हड्डियाँ तोड़ने से रोका है तो किसी निर्दोष की जान लेने के विषय में आप की शिक्षायें क्या हुंगी, इस का अनुमान प्रत्येक बुद्धिमान कर सकता है । कुर्आन जान के बदले जान, आँख के बदले आँख तथा

सारे छोटे बड़े ज़ख़्मी अंगों में बदले का यही संविधान परिचित कराता तथा उस के अनुसार इस्लामी न्यायपालिकाओं को फैसला करने का आदेश देता है। समझौते का केवल एक ही मार्ग है कि निहत अथवा ज़ख्मी व्यक्ति के घर वाले खूँबहा तथा आर्थिक क्षतिपूर्ति स्वीकार कर लें।

कुर्आन इस बात का आदेश देता है कि लोगों की धन सम्पत्ति सुरक्षित होनी चाहिये, उस पर किसी की अवैध दृष्टि नहीं पड़नी चाहिये, और इस के लिये वह चोरी, डकैती, रिश्वत और व्याज आर्थिक घपले, ग़बन और धोका धड़ी को नाजायज़ और अवैध बताता है। वह धन के प्रयोग में मध्यताप्रिय बनने की शिक्षा देता और बेजा खर्च एवं उन के दुरपयोग करने से रोकता है साथ ही क़ीमत बढ़ाने के लिये दैनिक प्रयोग वाले माल की होर्डिंग एवं संचिताकारी से रोकता है।

कुर्आन धन के विषय में मध्यवर्ती बनने पर उभारता है, अतः उस की यह शिक्षा है कि लोगों को न तो अधिक लालची और कंजूस होना चाहिये

और न ही उन्हें धन का दुरुपयोग करना चाहिये। वह कमाई के ऐसे समस्त वैधानिक तथा उचित साधनों की प्रोत्साहन करता है जिस से संबन्धित तमाम लोगों को आर्थिक एवं भौतिक लाभ पहुंचे जैसे क्रयविक्रय तथा किराये का कारोबार आदि। साथ ही साथ उस की यह भी शिक्षा है कि मनुष्य धन का इतना लोभी न बन जाये कि उसे अपने निर्धन भाइयों की चिनता न रहे अपितु उसे अपने धन में उन के अधिकारों तथा उन की आवश्यक्ताओं का ध्यान रखना चाहिये विशेष कर ऐसे निर्धन जो संबन्धी भी हूँ।

इस्लाम उत्तम स्वास्थय की सुरक्षा को अति महत्व तथा बढ़ावा देता है, इसी कारण उस का यह आदेश है कि पवित्र, शक्तिमान तथा लाभ दायक खाने खाये जायें तथा समस्त गन्दे हानिकारक आहार एवं खानपान से सख़्ती से बचा जाये जैसे मुर्दार का गोश्त, मादक पदार्थ, सिग्रेट एवं ड्रग्स आदि का प्रयोग। इस्लाम वर्त रखने को शारीरिक स्वास्थय के लिये लाभदायक औषधि के

रूप में परिचित कराता है, विशेष रूप से पेट के रोगी के लिये।

नबी करीम ﷺ ने असंख्य साधारण व्यवहारों की भी शिक्षा दी है साथ ही खाने पीने के उत्तम नियमों के पालन करने का महत्व भी बताया है। आप की शिक्षा है कि दाहिने हाथ से खाना खाया जाये और खाने में कोई बुराई न निकाली जाये बलकि जो कुछ मिले उसे सब्र व शुक्र से खालेना चाहिये। इसी कारण यदि किसी को कोई खाना पसन्द आये तो उसे खा ले और यदि नापसन्द हो अथवा खाने की इच्छा न हो तो बिना उस में बुराई निकाले उसे छोड़ देना चाहिये। इस से खाने का अपमान भी नहीं होगा और खिलाने वाले को दुख तथा उस की भावनाओं को ठेस भी नहीं पहुंचेगा।

इस्लाम में अकेले खाने की तुलना लोगों के संग मिल कर खाने को अधिक महत्व दिया गया है, ऐसा चाहे घर वालों के साथ किया जाये अथवा किसी ग़रीब, पड़ोसी और मित्र को

आमंत्रित करके किया जाये । खाने से पूर्व ﴾बिसिमिल्लाह﴿ कहा जाये जिस का अर्थ है : अल्लाह के नाम से आरंभ करता हूँ । और खाना समाप्त होने पर खाना खाने के बाद की दुआ पढ़ी जाये जिस में आहार मिलने पर अल्लाह की प्रशंसा तथा उस के आभार का वर्णन है । यह सारी शिक्षायें इस कारण दी गई हैं ताकि लोगों को इस बात का सदैव आभास रहे कि उन्हें किन उपकारों की सोग़ात मिली है और उन्हें किस महान शक्ति ने यह सब दिया है । नबी करीम ﷺ ने अन्य लोगों के सम्मान में तथा रोगों को फैलने से रोकने के लिये खाने पीने की चीज़ों में फूँक मारने और सांस लेने से भी रोका है ।

नबी करीम ﷺ ने लोगों को सार्वजनिक स्थानों पर सद्व्यवहार अपनाने की शिक्षा दी है, आप की शिक्षा है ऐसे स्थानों पर शोर न मचायी जाये, बड़ों का सम्मान किया जाये, छोटों पर दया की जाये, उपस्थित लोगों को सलाम किया जाये, लोगों के विषय में बुरी तथा अनुचित बातें

करने से ज़बान को सुरक्षित रखा जाये, यद्यपि वह सत्य ही क्यों न हो।

नबी करीम ﷺ ने लोगों को यह शिक्षा भी दी है कि वह हर समय तथा हर स्थिति में अपने ईश्वर को याद रखें इस प्रकार ईश्वर तथा उन के मध्य सदैव एक दृढ़ सम्बन्ध स्थापित रहेगा और निरंतर उन्हें अपार शक्ति एवं शांति का आभास होता रहेगा। उन का ह्रिदय आश्चर्यजनक शांति तथा शालीनता की भावनाओं से गदगद होजाये गा जिस का अर्थ यह है कि अब उन पर शैतानी चालें अपना प्रभाव नही डाल पायें गी अपितु वह हर कोण से सुरक्षित होंगे।

उदाहरण स्वरूप नबी करीम ﷺ की शिक्षा यह भी है कि सोते समय, शौच जाते समय, संभोग से पूर्व, यात्रा करते समय, लोगों से भयभीत रहने की स्थिति में, घर में प्रवेश करते अथवा निकलते समय, प्रातः तथा सायं काल में, किसी बिपता, दुख तकलीफ तथा दुर्भाग्य के समय, निर्धनता तथा कर्ज़ से पीणित होने की

स्थिति में, कब्रिस्तान ﴾शमशानघाट﴿ में प्रवेश करते समय, विश्राम के लिये ठहरते अथवा कैम्प लगाते समय एवं इसी प्रकार के अन्य अवसरों पर विशेष दुआयें पढ़ी जायें।

नबी करीम ﷺ के सिखाये हुये नैतिक सिद्धान्तों में से यह भी बड़ा महत्वपूर्ण है कि आप ﷺ ने यात्रा के अति उत्तम नियम सिखाये हैं। उदाहरण स्वरूप आप ﷺ का यह आदेश है कि यात्रा के समय यात्री को अपने घर वालों को अलविदा कहना चाहिये तथा उन के लिये अलविदाई दुआ करनी चाहिये, इसी प्रकार यात्री के घर वालों को भी उसे अलविदा करते हुये उस के धर्म उस की अमानत और उस के जीवन की सुरक्षा की दुआ देनी चाहिये। साथ ही आप की यह भी शिक्षा है कि मनुष्य को अकेले यात्रा नहीं करनी चाहिये अपितु लोगों का संग अपनाना चाहिये, तथा उन में से किसी को अपना अगुवा बना लेना चाहिये जिसे लोगों के प्रामर्श से किसी भी फैसले का अधिकार हो। यात्रा करते हुये यात्री

को निरंतर दुआ प्रार्थना तथा अपने ईश्वर को भी याद करते रहना चाहिये।

आशा के विपरीत उसे अचानक रात्रि के समय लौट कर अपने घर वालों को सरपराईज़ नहीं देना चाहिये अपितु उसे अपने पहुंचने के पहले ही सूचना देनी चाहिये ताकि उस की पत्नी उस की स्वागत के लिये पूर्ण रूप से तैय्यार हो। या वह सुबह होने की प्रतीक्षा कर ले।

नबी करीम ﷺ की शिक्षा यह भी है कि किसी महिला को अकेले यात्रा नहीं करनी चाहिये अपितु उसे या तो अपने पति के साथ यात्रा करनी चाहिये अथवा किसी ऐसे सम्बन्धी के साथ होना चाहिये जिस से उस का विवाह सदैव हराम है जैसे पिता, सगा चचा फूफा, मामूँ, खालू, भाई भतीजे भानजे आदि ताकि इस बात का पूर्ण विश्वास हो कि उस की मानमर्यादा ताथ धन सम्पत्ति दोनों सुरक्षित रहेंगे।

इस्लाम न्यायप्रिय है और सदैव न्यायपालन की दिशा लोगो को बुलाता है, वह समानता के

आधार पर लोगों को परस्पर मिलाता है, वह दृढ़तापूर्वक इस बात की शिक्षा देता है कि वचनों तथा समझौतों को पूरा करना चाहिये ताकि विश्वास की पुनरस्थापना होसके, शासकों की आज्ञापालन हो, प्रत्येक सद्कार्य का आदेश हो तथा प्रत्येक हीन तथा तुच्छ कार्य अवैध किये जायें, अपराधों, अत्याचारों, विद्रोहों पर प्रतिबन्ध लगे, समस्त निन्दा एवं ताड़ना योगी कार्यों की दृढ़तापूर्वक मनाही हो ।

इस्लाम सार्वभौमिक धर्म

इस्लाम एक विश्वविख्यात तथा सार्वभौमिक संदेश है, इस लिये कि अल्लाह ने मुहम्मद ﷺ के अतिरिक्त समस्त नबियों को केवल उन की अपनी जाति तथा राष्ट्र के पास सीमित समयकाल के लिये भेजा था, इस के विपरीत नबी करीम ﷺ को अल्लाह ने संपूर्ण ब्रम्हाण्ड के लिये दूत बना कर भेजा, काले गोरे, निर्धन धनवान, राजा प्रजा, अरबी गैर अरबी, आक़ा ग़ुलाम सब के लिये आप ﷺ को नबी नियुक्त किया गया, आरंभ से अन्त तक इस्लाम पूर्ण ब्रम्हाण्ड के लिये एक आलौकिक धर्म के रूप में धर्मनिर्माता का उपहार बन कर अवतरित हुआ है । विश्व स्तर पर इस्लाम को एक संविधान के रूप में स्वीकार करके उस से लाभ उठाना समय की सब से बड़ी आवश्यक्ता है, धर्ती के किसी भी कोने में इस के अनुसार जीवन व्यतीत करके सफलता प्राप्त की जासकती

है यथा चाँद पर जनसंख्या पाये जाने की सूरत में वहाँ पर भी इस्लाम के आदेशों का पालन करने में किसी को कोई कठिनाई महसूस नही होगी।

इस्लामी शिक्षा की विशेष्तायें

अल्लाह ने इस्लामी संदेशों को समझने तथा उन का पालन करने के लिये इस्लाम को अति सरल बनाया है, उस ने भूतकाल में किये जाने वाले कुछ धार्मिक आधारों तथा तरीक़ों को समाप्त किया एवं हिकमत तथा उचित कारण के आधार पर कुछ को बाक़ी रखा। इस्लामी संविधान सब समाज के समस्त वर्गों के लिये उचित तथा लाभदायक है, वह प्रत्येक काल की आत्मिक, शारीरिक, सामाजिक तथा आर्थिक आवश्यक्ताओं की पूर्ति की भरपूर शक्ति रखता है

इस्लामी शिक्षा की निम्नलिखित आधुनिक विशेष्तायें हैं।

1. बौद्धिक तथा ज्ञानात्मक शिक्षायें : सत्य का खोजी इस्लामी शिक्षाओं को अति तार्किक बौद्धिक तथा उचित पायेगा।

2. कौशलता : जब ईश्वर सर्व कौशल शक्तियों का स्वामी है तो उस की शिक्षायें भी अवश्य कौशल हुंगी तथा उन में परस्पर न तो कोई टकराव होगा और न ही उन में कोई कमी होगी।

3. स्पष्टता : अल्लाह बड़ा दयालू एवं कृपावान है, वह हमें खुराफात से खाली रहस्यरहित बड़े स्पष्ट तथा सरल मार्ग दिखाता है।

4. वैज्ञानिक : यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि आप को कुर्आन और अन्तिम दूत मुहम्मद ﷺ की बातों में कुछ ऐसे संदेश मिलें जिन की खोज आधुनिक विज्ञान जगत की सहायता से वर्तमानकाल में हुई हो। यह इस वास्तविक्ता का प्रमाण हैं कि कुर्आन अन्तिम ईशवाणी है तथा मुहम्मद ﷺ अन्तिम ईश्दूत हैं।[1]

---

[1] देखिये : कुर्आन और माडर्न साइंस, लेखक : डा मौरिस बोकाई।

5. **भविष्यवाणी :** कुर्आन व हदीस में बहुत सारे घटनाओं की भविष्यवाण की गई है जो समय के साथ अक्षरशः सत्य साबित होरही हैं।

6. **मध्यवर्ती :** इस्लाम में आप को आत्मिक तथा सांसारिक वस्तुओं के मध्य कोई टकराव नहीं दिखाई देगा। मनुष्य अपनी दिनचर्या तथा समस्त कार्यों का स्वयं उत्तरदायी है, यदि कोई सही तरीक़े से अल्लाह के आदेशों का पालन करता है, उस की शरतें पूरी करता है तो इस का अर्थ यह है कि वह अपने आप को ईश्वरीय वर्दान तथा पुरस्कार का हक़दार बना रहा है। ठीक यही बात उपासना के विशेष कार्यों का भी है। अतः सेकुलरिज़्म, पदार्थवाद, ब्रहमनवाद, वैराग्य तथा सन्यासवाद सभी को इस्लाम में निरस्त कर दिया गया है। इस्लाम मनुष्य की आत्मिक तथा शारीरिक आवश्यक्ताओं के मध्य

संतुलन बनायें रखने के लिये उसे माध्यमिक मार्ग दिखाता है। इसी कारण अल्लाह ने मुस्लिम समुदाय को माध्यमिक राष्ट्र का नाम दिया है ﴾2:143﴿

7. **सम्मिलिति एवं लोकप्रियता** : इस्लाम मनुष्य को उस की जीवन की समस्त समस्याओं का सटीक समाधान प्रदान करता है चाहे वह आत्मिक हूँ अथवा व्यक्तिगत, चाहे वह सामाजिक हूँ अथवा नैतिक, चाहे राजनैतिक हूँ अथवा आर्थिक, सब में इस्लाम एक सर्वोत्तम मार्गदर्शी सिद्ध हुआ है

8. **अछूतापन** : इस्लामी शिक्षायें एक ऐसा सफल तथा जीवित चमत्कार हैं जिस की मानवजाति से आशा करना असंभव है, मनुष्य इस प्रकार की शिक्षायें न तो इस से पूर्व कदापि प्रस्तुत कर सका है और न ही भविष्य में कदापि वह ऐसा कर सकता है।

9. **समानता : इस्लामी शिक्षायें रंग, नस्ल, राष्ट्र आदि के आधार पर लोगों के मध्य**

रेखा नहीं खींचतीं और न ही उन में अन्तर करती हैं, इस लिये कि सभी आदम व हव्वा नामी एक ही माता पिता की संतान हैं, इस्लाम इस बात की शिक्षा देता है कि नेकी और बदी, सत्य और असत्य, पुण्य और पाप की कसौटी तक़्वा और शुद्धकार्य हैं, परिणाम स्वरूप अल्लाह के निकट सर्वोत्तम मनुष्य वही है जिस में अल्लाह का भय और शुद्धकार्य सर्वाधिक हूँ। दिव्य क़ुर्आन के एक श्लोक में अल्लाह कहता है : ﴾अल्लाह के निकट तुम में सर्वसम्मानित वही है जो तुम में उस से सर्वाधिक भय खाने वाला हो﴿ ﴾**49:13**﴿

इस्लाम ही क्यों

हमें मुसलमान इस कारण होना चाहिये क्यों कि अल्लाह ने समस्त प्राचीन धर्मों को इस्लाम के माध्यम से निरस्त कर दिया है । अल्लाह दिव्य क़ुर्आन में ब्रम्हाण्ड की समस्त जातियों को संबोधित करते हुये फ़र्माता है : आज हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारे धर्म की पूर्ति कर दी, अपना वरदान तुम पर पूरा कर दिया, तथा धर्म के रूप में इस्लाम को तुम्हारे लिये पसन्द कर लिया : **(5:3)**

हमें इस कारण मुसलमान होना चाहिये क्यों कि लोगों को प्रत्येक काल में अल्लाह के बताये हुये उन नियमों के अनुसार उस की उपासना करना चाहिये जिसे अल्लाह ने अपने दूत पर उतारा है, उदाहरण स्वरूप बनू इस्राईल ﴾यहूदियों﴿ को मूसा عليه السلام के आदेशानुसार अल्लाह की उपासना करने की शिक्षा मिली, जब हज़रत ईसा عليه السلام को उन के पास दूत बनाकर भेजा गया तो उन्हें इंजील में उपस्थित उन की शिक्षानुसार

अल्लाह की उपासना करने का आदेश मिला। फिर अन्त में जब अल्लाह ने संपूर्ण ब्रम्हाण्ड के पास इस्लाम के साथ मुहम्मद ﷺ को भेजा तो चाहे वह यहूदी हूँ या ईसाई हिन्दू हूँ या जैनी बुद्धिष्ट हूँ या सिख सब जातियों के लिये अनिवार्य हुआ कि वह इस्लाम ग्रहण करें तथा मुहम्मद ﷺ को अन्तिम ईश्दूत मान कर उन की शिक्षानुसार केवल अल्लाह की उपासना करें।

कारण कुछ भी हूँ यदि कोई इस्लाम के संदेशों को ठुकरा देता है तो महा पाप का बोझ अपने सिर लेता है।

दुर्भाग्यवश यदि इसी स्थिति में उस की मृत्यु होजाती है तो मरणोपरांत उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा तथा सदैव के लिये उसे नर्क के हवाले कर दिया जायेगा। दिव्य कुर्आन तथा मुहम्मद ﷺ के फ़र्मान ने बार बार इसे अपनी चर्चा का विषय बनाया है। अल्लाह दिव्य कुर्आन में कहता है : ﴾इस्लाम के अतिरिक्त यदि कोई अन्य धर्म की कामना करेगा तो कदापि उस से

स्वीकार न किया जायेगा तथा प्रलय के दिन वह हानि उठाने वालों में से होगा (3:85) मुहम्मद ﷺ का भी फ़र्मान है : यहूदियों तथा ईसाइयों में से जो भी मेरे विषय में सुने तथा मेरे लाये हुये धर्म को न माने एवं इसी स्थिति में उस की मृत्यु होजाये तो वह नर्कवासियों में से होगा । [1]

संभव है कुछ लोग यह सोच कर इस्लाम स्वीकर न करें कि मुसलमान होने का अर्थ यह है कि भेजे गये पिछले समस्त ईश्दूतों से मुंह मोड़ लिया जाये । निम्न लिखति कारणों से यह एक गलत विचार है :

- समस्त रसूलों पर ईमान रखना इस्लामी आस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ तथा आधार है साथ ही कोई मुसलमान उस समय तक मुसलमान ही नहीं होसकता जब तक कि मूसा عليه السلام ईसा عليه السلام एवं अन्य ईश्दूतों पर विश्वास न रखे ।

[1]) (सहीह मुस्लिम : (284))

- ईश्दूतों पर ईमान प्रत्येक ईश्दूत के लाये हुये धर्म का भाग था अर्थात हर आने वाले दूत ने अपने पश्चात आने वाले दूत की शुभसूचना दी तथा उस पर ईमान लाने एवं उस की शिक्षानुसार जीवन व्यतीत करने के आदेश दिये। अतः किसी भी ईश्दूत के इंकार का अर्थ यह है कि अपने पूर्वजों का इंकार किया जाये।
- किसी ईश्दूत के इंकार का अर्थ यह है कि उस के भेजने वाले ईश्वर ही का इंकार कर दिया जाये।

इस्लामी दर्शनाकाश में ईश्दूतों का परस्पर संबन्ध ऐसे ही है जैसे किसी चैन की कड़ियाँ, कि एक़ कड़ी के इंकार का अर्थ यह है कि पूरे चैन ही का इंकार कर दिया जाये परिणाम स्वरूप मुसलमान होने का अर्थ यह है कि मुहम्मद से पूर्व आने वाले समस्त ईश्दूतों पर सम्मानजनक आस्था रखी जाये तथा उन में से किसी से मुंह न मोड़ा जाये जैस कि कुछ लोगों की सोच है।

सारांश

इस पुस्तक में निम्न लिखित वास्तविक्ताओं पर तर्कवितर्कीय चर्चा की गई तथा उन्हें प्रमाणित किया गया :

प्रथम : सृष्टि की रचना का उद्देश्य एकमात्र अल्लाह की पूजा तथा उपासना ﴾इबादत﴿ है ।

द्वितीय : इस्लाम का मूल संदेश यह है कि बिना किसी साझीदार तथा मध्यवर्ती के मात्र एक अल्लाह की उपासना की जाये ।

त्रतीय : इस बात का विस्तारपूर्वक प्रमाण कि अल्लाह ही एक मात्र उपासना का अधिकार रखता है ।

चौथा : झूटे धर्मों का संदेश यह है कि अल्लाह को छोड़ कर उस की सृष्टि की उपासना की जाये ।

पाँचवाँ : अल्लाह और उस की सृष्टि के मध्य पूर्णत्यः भिन्नता पाई जाती है, अल्लाह अकेला तथा अपनी सृष्टि से स्पष्टतः अलग है।

छठा : समस्त धर्मों का पवित्र मूल नाम इस्लाम है तथा उस के अर्थ की विशालता उस की सत्यता की दिशा संकेत करती है।

सातवाँ : इस्लाम के मूल आधार तथा उस की विशेष्तायें भी उस की सत्यता को दर्शाती हैं।

आठवाँ : पूर्ण कुर्आन अल्लाह का कलाम ﴾शब्द﴿ हैं जिन्हें अब तक सुरक्षित रखा गया है तथा भविष्य में भी उन की सुरक्षा का वचन दिया गया है।

नौवाँ : इस्लामी शिक्षायें आधुनिक एकाकीय, तार्कीय तथा अति स्पष्ट हैं।

दसवाँ : नबी करीम ﷺ केवल एक मनुष्य थे जिन्हें अल्लाह ने ईश्दौत्य का कार्यभार देकर संसार में भेजा ताकि वह मूल संदेश को दोहरायें तथा लोगों को संतुष्ट करें, लोगों को बतायें कि मात्र एक

अल्लाह की उपासना होनी चाहिये तथा उस के साथ किसी वस्तु की उपासना नहीं होनी चाहिये। पवित्र ग्रन्थों को समझने तथा उन के अनुसार जीवन व्यतीत करने का एकमात्र साधन अल्लाह के भेजे हुये ईश्दूत हैं। आदम عليه السلام व ईसा عليه السلام के अतिरिक्त सभी ने माता पिता से जन्म लिया। हज़रत आदम عليه السلام को खंखनाती मिट्टी से पैदा किया गया जबकि हज़रत ईसा عليه السلام ने बिना पिता केवल माता मरयम की कोख से जन्म लिया।

ग्यारहवाँ : इस्लाम ही वह एकमात्र धर्म है जो ईश्वर के विषय में सत्यपूर्ण विचारधारा की शिक्षा देता है जिस में न तो किसी प्रकार का कोई संदेह है न ही वह अतर्कीय हैं।

बारहवाँ : इस्लामी मूल शिक्षायें तथा उन के सरचश्में इस बात का स्पष्ट प्रमाण हैं कि अल्लाह ही ने मुहम्मद ﷺ को इस्लाम का सार्वभौमिक संदेश देकर संसार में भेजा जिस ने प्राचीन समस्त धर्मों को निरस्त कर दिया है।

तेरहवाँ : यह बात प्रमाणित हो चुकी है कि इस्लाम ही प्राचीन समस्त धर्मों की मूल शिक्षाओं का निचोड़ तथा पुनरावृत्ति है । केवल एक अल्लाह की उपासना ही समस्त सत्य धर्मों का मूल संदेश था जिसे इस्लाम ने पुनर्जीवन दिया । अब सदैव के लिये इस्लाम संपूर्ण ब्रम्हाण्ड का एकमात्र धर्म है । संसार में कहीं भी कोई इस्लाम के विषय में सुनता है उस के लिये अनिवार्य है कि वह इस्लाम की शिक्षाओं का पालन करे । तथा जो इसे रद्द तथा इस का इंकार करे तो जैसे उस ने अल्लाह के संदेश ही का इंकार एवं अपने नर्क में जाने का कारण उत्पन्न कर लिया ।

अन्तिम प्रन्तु समाप्ति नही : अन्त में हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि इस्लाम एक सार्व भौमिक धर्म है तथा प्रत्येक काम में प्रत्येक मनुष्य उसे अपना कर एक सफलता पूर्वक जीवन व्यतीत कर सकता है ।

यह चौदह मूल सिद्धान्त हैं जिन की तार्कीय बातें इस बात को अनिवार्य करती हैं कि इस्लाम

को अल्लाह के अन्तिम सत्य धर्म के रूप में लोगों को अपनाना चाहिये तथा समस्त मिथ्या धर्मों से अलग होकर इस्लाम की शीतल छाया में सांसारिक तथा आत्मिक सफलता प्राप्त करनी की चेष्टा करनी चाहिये।

प्रिय पाठको : आप को इस पुस्तक में सत्य मार्ग दिखाया गया है तथा अल्लाह ने आप को सत्य तथा असत्य के मध्य अन्तर करने की क्षमता भी प्रदान की है। आप को इस्लाम स्वीकार करने या न करने का स्वतंत्र वातावरण एवं अधिकार भी मिला है। यदि आप उस का निमंत्रण स्वीकार करते हैं तो आप का स्वर्ग में हार्दिक स्वागत होगा एवं यदि आप उस का इंकार करते हैं तो आप को मरणोपरांत नर्क जैसी सदैव यात्ना वाली स्थान में प्रवेश करना होगा जो आप के जीवन का सर्वमहान धचका होगा।

आप मुसलमान कैसे हो सकते हैं

निम्नलिखित धर्मों में से प्रत्येक धर्म में प्रवेश करने की कुछ विशेष शरतैं हैं :

यहूदी बनने के लिये अनिवार्य है कि आप हज़रत ईसा ﵇ की नुबूव्वत अथवा आप की पवित्रता का इंकार करें । इंजील के आसमानी किताब होने का इंकार करें । मुहम्मद ﷺ की नुबूव्वत तथा कुर्आन का इंकार करें ।

ईसाई होने के लिये अनिवार्य है कि आप त्रीश्वरवाद पर ईमान लायें, ईश्वर, माता तथा संतान के मिश्रण से बने उपास्य को स्वीकार करें इस बात पर ईमान लायें कि ईश्वर मनुष्य का रूप धारण करके धर्ती पर उतरा ताकि मर कर लोगों के पापों का प्रायश्चित करे । मुहम्मद ﷺ की नुबूव्वत तथा कुर्आन का इन्कार करें ।

प्रन्तु मुसलमान होने के लिये केवल इस बात की गवाही देना काफी है कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं । समस्त झूटे उपास्यों तथा

देवी देवताओं का इंकार करें। मूसा ﷺ, ईसा ﷺ समेत समस्त ईश्दूतों पर ईमान लायें तथा यह आस्था रखें कि नुबूव्वत की यह श्रंखला मुहम्मद ﷺ पर आकर समाप्त होगई है अब संसार के अन्त तक आप के अतिरिक्त कोई अन्य दूत नहीं आयेगा। समस्त आकाशीय धर्म ग्रन्थों पर ईमान कि उन्हें उन के मूल रूप में अल्लाह ही ने उतारा था किन्तु बाद में लोगों ने उन में अपनी विचार धाराओं के अनुसार परिवर्तन कर दिया। केवल अन्तिम धर्म ग्रन्थ कुर्आन ही अपने मूल रूप में अब तक बाक़ी है तथा अन्त तक बाक़ी रहेगा क्यों कि उस की सुरक्षा का दायित्व स्वयं उसे उतारने वाले ईश्वर ने लिया है।

यदि कोई निम्नलिखित कार्य करता है तो वह मुसलमान होसकता है :

- इस बात की आस्था कि अल्लाह एक है एवं अपनी सृष्टि से परे सातों आकाश के ऊपर अपने सिंहासन पर विराजमान है।

- सत्यता के साथ इस बात की गवाही दे कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई सत्य उपास्य नहीं तथा मुहम्मद ﷺ उस के दास तथा दूत हैं ।
- इस बात की आस्था रखे कि हज़रत ईसा عليه السلام जो हज़रत मरयम अलैहस्सलाम की संतान हैं वह केवल अल्लाह के नबी और रसूल थे ।
- **ईमान के छ मूल आधारों पर विश्वास एवं आस्था रखना तथा बिना कोई शरीक व साझी बनाये ईश्दूत मुहम्मद ﷺ के आदेशानुसार एकमात्र अल्लाह की उपासना करना ।**
- लोगों के समक्ष उपरोक्त समस्त बातों की खुल्लम खुल्ला गवाही देना ।

अल्लाह करे सत्य प्रकाश हमारे बुद्धि तथा ह्रिदय को आलोकमय कर दे । अल्लाह करे सत्यप्रकाश हमें इस जीवन में सुख शांति की दिशा मार्गदर्शित करे एवं मरणोपरांत हमें अनन्त सौभाग्य मिले ।

शुभचिन्तक

माजिद स. अल-रस्सी
जुबैल 《31961》

P.O.Box 10283

K.S.A

Mobile: 00966(0)505906761

Fax: 00966(0)33482869

readquran1000@hotmail.com

इस्लाम के विषय में अधिक जानकारी के लिये निम्नलिखित पुस्तकों का अध्यन लाभदायक है।

1. अनूदित दिव्य कुर्आन : दारुस्सलाम प्रकाशन P.O. Box 21441 – Riyadh 11475, Tel. 014033962, K.S.A www.dar-us-salam.com
2. इस्लाम धर्म के तीन मूल आधार एवं उन की व्याख्या. शैख मुहम्मद बिन सालेह उषैमीन **Al-hidaayah** (www.al-hidaayah.co.uk)

3. The Purpose of Creation, Dr. Bilal Philips, Dar Al Fatah, P.O. Box 23424, Sharjah, U.A.E.
4. The True Message of Jesus Christ, Dr. Bilal Philips, Dar Al Fatah,
5. Christian Muslim Dialogue, by M. Baageel,
6. Forty Hadith of Nawawi,
7. A Simple Call to One God.
8. Let the Bible Speak, by Ali Muhsen or Abdur Rahman Dimishqia
9. The Bible led me to Islam, Abdul-Malik LeBlanc, Al-Attique Publisher, www.al-attique.com
10. The Status of Women in Islam, Dr. Jamal Badawi,
11. The Qur’an and Modern Science, Dr. Maurice Bucaille
12. Understanding Islam and Muslims.

इस्लाम की अधिक जानकारी के लिये आप निम्नलिखित वेबसाइटों की सहायता भी ले सकते हैं ।

इस्लाम धर्म के प्रमुख वेब साइट्स

www.islam-qa.com
www.thetruereligion.com
www.islamweb.net
www.bilalphilips.com
www.islamunveiled.com
www.fatwa-online.com
www.islam-guide.com
www.alharmain.org
www.al-islam.com
www.ibnbaz.com
www.discoverislam.com
www.ibnothaimeen.com
www.viewislam.com
www.islamtoday.com
www.it-is-truth.org

अनुवादक :

महफूज़ुर्रहमान समीउल्लाह मदनी
हिन्दी प्रवक्ता जुबैल दावा केन्द्र
सऊदी अरब (03-11-2008) AD